**R. K. Advertising**
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

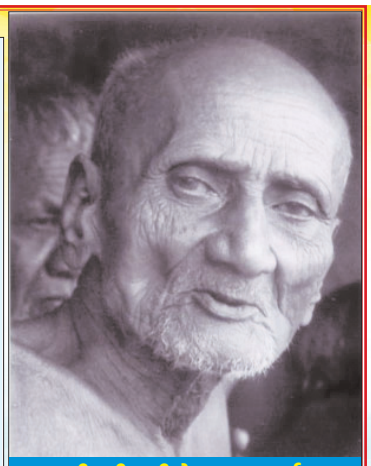

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी



1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

# जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 22 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 31 मार्च 2025, वीर नि. संवत् 2551

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

# हिंदू विवाह अधिनियम में ही सुने जाएंगे जैनियों के वैवाहिक मामले

**पुनीत जैन**

**इंदौर (मध्य प्रदेश)।** हाईकोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने साफ कर दिया कि जैन समाज के वैवाहिक मामले हिंदू विवाह अधिनियम के तहत ही सुने और निराकृत किए जाएंगे। कोर्ट ने इंदौर कुटुंब न्यायालय के गत आठ फरवरी के उस निर्णय को निरस्त कर दिया, जिसमें कहा गया कि जैन समाज के वैवाहिक मामलों का निराकरण हिंदू विवाह अधिनियम के तहत नहीं किया जा सकता। न्यायालय ने कुटुंब न्यायालय को मामले में हिंदू विवाह अधिनियम - के प्रविधानों के तहत आगे सुनवाई करने का आदेश भी दिया। हाईकोर्ट ने कहा कि कुटुंब न्यायालय

ने यह निष्कर्ष निकालकर कि हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 के प्रविधान जैन समुदाय पर लागू नहीं होते हैं, गंभीर त्रुटि की है। वर्ष 2014 में जैन समुदाय को भले अल्पसंख्यक का दर्जा दे दिया गया, लेकिन उसे किसी भी मौजूदा कानून के तहत आवेदन करने के अधिकार से वंचित नहीं किया गया है। कुटुंब न्यायालय को लग रहा था कि जैनियों के मामले हिंदू विवाह अधिनियम के तहत निराकृत नहीं किए जा सकते हैं तो इसे उच्च न्यायालय को भेजना चाहिए था, पर ऐसा नहीं किया गया।

**यह भी कहा न्यायालय ने** - उच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि हिंदू विवाह वैधता अधिनियम, 1949 को हिंदुओं, सिखों और जैनों तथा उनकी विभिन्न जातियों, उपजातियों और संप्रदायों के बीच सभी मौजूदा विवाहों को वैध बनाने के लिए पारित किया गया था। अधिनियम की धारा 2 में हिंदू की परिभाषा के अनुसार सिख या जैन धर्म को मानने वाले व्यक्ति शामिल हैं। उक्त अधिनियम की धारा 3 में स्पष्ट कहा गया है कि सिख और जैन सहित हिंदुओं के बीच कोई भी विवाह किसी अन्य मौजूदा कानून, व्याख्या, पाठ, नियम, रीति-रिवाज या उपयोग के आधार पर अमान्य नहीं माना जाएगा।

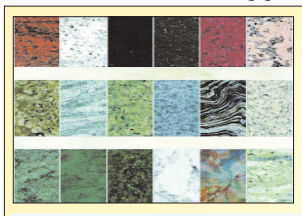

इंडियन इम्पोर्टेड ग्रेनाइट मार्बल्स
(सभी प्रकार के मार्बल्स को खरीदने के लिए सम्पर्क करें)

❑ तिलक मार्बल्स (प्रा.) लि. ❑ तिलक मार्बल्स, तिलक ग्रैनाइट्स ❑ श्री रघुपति कोटेक्स पाटन
❑ तिलक मार्बल्स एण्ड हैण्डीक्राफ्ट्स ❑ तिलक स्टोन आर्टस इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर ❑ तिलक हैण्डीक्राफ्ट्स
❑ शाश्वत मार्बल्स एण्ड हैण्डीक्राफ्ट्स ❑ राजीव मार्बल्स एण्ड इंजीनियर्स, समस्त तिलक ग्रुप

सम्पर्क अधिकारी: शेखर चन्द पाटनी, 9667168267, 8003892803 ईमेल - rkpatni777@gmail.com

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

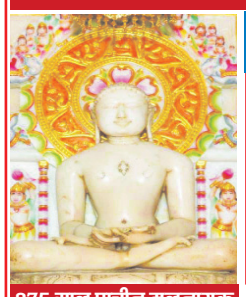
875 साल प्राचीन मूलनायक
श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE

शांतिधारा : 7:30 AM
संध्या आरती - 7:00 PM

@jainmandirhasteda

नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9784857991

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.

अन्य जानकारी हेतु स्थानीय संपर्क सूत्र
मनीष गंगवाल-सह अध्यक्ष
मोबाइल नंबर 95880 20330

इस अतिशय क्षेत्र में किसी भी तरह की बोली, चंदा, डाक या राशि का आग्रह वर्जित है।

स्थापित श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2421 सन् 1894 — Estd. 1895

# श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

## (धर्म, तीर्थ, श्रुत, महिला, युवा)

5,Khandelwal Digamber Jain Mandir Complex, Raja Bazar, Connaught Circus New Delhi-110001,
Office: +91-11-2334 4668, 2334 4669
Email: digjainmahasabha@gmail.com, Website: www.digjainmahasabha.org


प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांति सागर जी महाराज

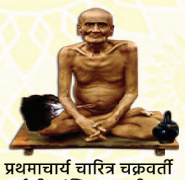

# जैन पंचांग



# अप्रैल 2025

| दिनांक | चंद्र संचार | जाप | बैंक |
|---|---|---|---|
| 1 | वृष 16/30 | | |
| 2 | वृष | | |
| 3 | मिथुन 18/22 | | |
| 4 | मिथुन | | |
| 5 | कर्क 23/25 | | |
| 6 | कर्क | | |
| 7 | कर्क | | |
| 8 | सिंह 07/55 | | |
| 9 | सिंह | | |
| 10 | कन्या 19/04 | | |
| 11 | कन्या | | |
| 12 | कन्या | | |
| 13 | तुला 07/39 | | |
| 14 | तुला | | |
| 15 | वृश्चिक 20/27 | | |
| 16 | वृश्चिक | | |
| 17 | वृश्चिक | | |
| 18 | धनु 08/21 | | |
| 19 | धनु | | |
| 20 | मकर 18/04 | | |
| 21 | मकर | | |
| 22 | कुंभ 24/31 | | |
| 23 | कुंभ | | |
| 24 | मीन 27/26 | | |
| 25 | मीन | | |
| 26 | मेष 27/39 | | |
| 27 | मेष | | |
| 28 | वृष 26/53 | | |
| 29 | वृष | | |
| 30 | मिथुन 27/15 | | |

### सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. 1–11/06 बजे से 30/18 बजे तक। ता. 2–06/18 बजे से 30/17 बजे तक। ता. 6–06/15 बजे से 30/14 बजे तक। ता. 7–06/14 बजे से 06/25 बजे तक। ता. 8–06/13 बजे से 07/55 बजे तक। ता. 16–06/06 बजे से 29/55 बजे तक। ता. 20–11/48 बजे से 30/01 बजे तक। ता. 21–12/37 बजे से 30/01 बजे तक। ता. 27–05/57 बजे से 24/38 बजे तक। ता. 29–05/55 बजे से 18/47 बजे तक। ता. 30–05/55 बजे से 29/54 बजे तक।

### सूर्योदय सूर्यास्त

| ता. | सूर्योदय | सूर्यास्त |
|---|---|---|
| 1 | 06.19 | 18.41 |
| 6 | 06.15 | 18.44 |
| 11 | 06.10 | 18.47 |
| 16 | 06.06 | 18.48 |
| 21 | 06.01 | 18.50 |
| 26 | 05.58 | 18.51 |
| 30 | 05.55 | 18.53 |

### 1 अप्रैल सूर्योदय का लग्न चक्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| गु. 2 | चं. 1 / 3 मं. | शु. 12 श. सू. रा. बु. / 6 के. | 11 / 10 / 9 |
| 4 | 5 | 7 | 8 |

### पंचक

ता. 22–24/31 बजे से ता. 26–27/39 बजे तक।

(चन्द्र चिह्न) सूर्योदय के समय बांया स्वर रहेगा।
(सूर्य चिह्न) सूर्योदय के समय दांया स्वर रहेगा।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **रवि** |   आचार्यश्री समयसागरजी | **6** चैत्र शुक्ल 9; 19/22; श्रीवत्स; पुष्य दिन-रात; रवि-पुष्य योग, श्रीराम जन्मोत्सव | **13** वैशाख कृष्ण 1; दिन-रात; छत्र; चित्रा 21/11; सूर्य अश्विनी मेष में, षोडशकारण व्रत पूर्ण | **20** वैशाख कृष्ण 7; 19/00; शुभ; पू.षा. 11/48; त्रिपुष्कर योग | **27** वैशाख कृष्ण 30; 25/00; आनन्द; अश्विनी 24/38; अमावस, सूर्य भरणी में |
| **सोम** |   मुनिश्री योगसागरजी | **7** चैत्र शुक्ल 10; 20/00; प्रजापति; पुष्य 06/25 | **14** वैशाख कृष्ण 1; 08/25; ध्वज; स्वाती 24/13; डॉ. अम्बेडकर जयंती | **21** वैशाख कृष्ण 8; 18/58; अमृत; उ.षा. 12/37 | **28** वैशाख शुक्ल 1; 21/10; चर; भरणी 21/37 |
| **मंगल** | **1** चैत्र शुक्ल 4; 26/32; मुसल; भरणी 11/06; बैंक अवकाश | **8** चैत्र शुक्ल 11; 21/12; आनन्द; आश्लेषा 07/55 | **15** वैशाख कृष्ण 2; 10/55; श्रीवत्स; विशाखा 27/10; त्रिपुष्कर योग | **22** वैशाख कृष्ण 9; 18/12; [illegible]; श्रवण 12/44; पंचक, पृथ्वी दिवस | **29** वैशाख शुक्ल 2; 17/31; गद; कृत्तिका 18/47; त्रिपुष्कर योग |
| **बुध** | **2** चैत्र शुक्ल 5; 23/49; सिद्धि; कृत्तिका 08/49; दशलक्षण व्रत प्रा. | **9** चैत्र शुक्ल 12; 22/55; चर; मघा 09/57 | **16** वैशाख कृष्ण 3; 13/16; सौम्य; अनुराधा 29/55 | **23** वैशाख कृष्ण 10; 16/43; मित्र; धनिष्ठा 12/07; पंचक | **30** वैशाख शुक्ल 3; 14/12; शुभ; रोहिणी 16/18; दान दिवस, अक्षय तृतीया |
| **गुरु** | **3** चैत्र शुक्ल 6; 21/41; उत्पात; रोहिणी-मृगशिरा 07/02-29/51 | **10** चैत्र शुक्ल 13; 25/00; गद; पू.फा. 12/24; महावीर जन्म सं. 2624 प्रा., श्री महावीर जयंती, रत्नत्रय व्रत प्रा. | **17** वैशाख कृष्ण 4; 15/23; कालदण्ड; ज्येष्ठा दिन-रात | **24** वैशाख कृष्ण 11; 14/32; पद्म; शतभिषा 10/49; पंचक |   मुनि श्रीनियमसागरजी |
| **शुक्र** | **4** चैत्र शुक्ल 7; 20/12; छत्र; आर्द्रा 29/20 | **11** चैत्र शुक्ल 14; 27/21; शुभ; उ.फा. 15/10; दशलक्षण व्रत पूर्ण | **18** वैशाख कृष्ण 5; 17/07; चर; ज्येष्ठा 08/21; गुड फ्राइडे | **25** वैशाख कृष्ण 12; 11/44; ध्वांक्ष; पू.भा. 08/53; पंचक |   मुनि श्रीप्रमाणसागरजी |
| **शनि** | **5** चैत्र शुक्ल 8; 19/26; ध्वज; पुनर्वसु 29/32 | **12** चैत्र शुक्ल 15; 29/51; अमृत; हस्त 18/08; पूर्णिमा, रत्नत्रय व्रत पूर्ण, श्री हनुमान जन्मोत्सव | **19** वैशाख कृष्ण 6; 18/21; गद; मूल 10/21 | **26** वैशाख कृष्ण 13-14; 08/27-28/49; [illegible]; उ.भा.-रेवती 06/27-27/39; पंचक |   मुनिश्री निकलंकसागरजी |

### तीर्थंकर दर्पण

| | | |
|---|---|---|
| 2 | भ. अजितनाथजी | –मोक्ष |
| 3 | भ. संभवनाथजी | –मोक्ष |
| 8 | भ. सुमतिनाथजी | –जन्म–ज्ञान–मोक्ष |
| 10 | भ. महावीरस्वामजी | –जन्म |
| 12 | भ. पद्मप्रभजी | –ज्ञान |
| 15 | भ. पार्श्वनाथजी | –गर्भ |
| 22 | भ. मुनिसुव्रतनाथजी | –ज्ञान |
| 23 | भ. मुनिसुव्रतनाथजी | –जन्म–तप |
| 26 | भ. धर्मनाथजी | –गर्भ |
| 26 | भ. नमिनाथजी | –मोक्ष |
| 28 | भ. कुन्थुनाथजी | –जन्म–तप–मोक्ष |

### आचार्य दर्पण

| | | |
|---|---|---|
| 5 | आचार्यश्री समयसागरजी | –आचार्य पद |
| 10 | मुनिश्री विशुद्धसागरजी | –आचार्य पद |
| 10 | मुनिश्री प्रमाणसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 10 | मुनिश्री आर्जवसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 10 | मुनिश्री मार्दवसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 10 | मुनिश्री पवित्रसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 10 | मुनिश्री उत्तमसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 10 | मुनिश्री चिन्मयसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 10 | मुनिश्री पवनसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 10 | मुनिश्री सुखसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 10 | मुनिश्री सन्मतिसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 10 | मुनिश्री ज्ञानसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 10 | मुनिश्री अतिवीरजी | –मुनि दीक्षा |
| 11 | मुनिश्री निकलंकसागरजी | –समाधि |
| 19 | मुनिश्री पुष्पदंतसागरजी | –समाधि |
| 21 | आर्यिकाश्री सुपार्श्वमतिजी | –समाधि |
| 22 | आचार्यश्री धर्मसागरजी | –समाधि |
| 25 | आचार्यश्री बाहुबलीसागरजी | –समाधि |
| 27 | निर्यापक मुनिश्री योगसागरजी | –मुनि दीक्षा |
| 27 | निर्यापक मुनिश्री नियमसागरजी | –मुनि दीक्षा |

### माह के प्रमुख व्रत

| | |
|---|---|
| 2 | दशलक्षण व्रत प्रारंभ |
| 2 | पुष्पांजलि व्रत प्रारंभ |
| 3 | रोहिणी व्रत |
| 6 | पुष्पांजलि व्रत पूर्ण |
| 10 | रतनत्रय व्रत प्रारंभ |
| 10 | महावीर जयंती (जन्म दिवस) |
| 11 | दशलक्षण व्रत पूर्ण |
| 12 | रत्नत्रय व्रत पूर्ण |
| 13 | षोडशकारा व्रत पूर्ण |
| 30 | अक्षय तृतीया (दान दिवस) |
| 30 | रोहिणी व्रत |

### माह के शुभ मुहूर्त

नवीनगृहप्रवेश–18,21,23,24,25,30
घर नवीनीकरण– 2,3,5,10,12,13,14,20,21,25,26,30
पुराने/किराये के घर में प्रवेश–12,14,21,23,24,25,30
विवाह– 16,18,19,20,21,25,30
वाहन खरीदी– 2,3,5,7,12,13,14,16,17,23,24,30
घर जमीन खरीदना– 3,5,7,9,10,18,19,20,24,25,26
शिलन्यास मुहूर्त–21,23,24,30
मशीनरी प्रारंभ– 5,7,12,16,18,23
मुण्डन–7,23,24,30
शिशु को प्रथम देवदर्शन– 2,10,13,14,20,24,25,30
दुकान या कार्यालय प्रारंभ–21,25,30
नामकरण– 2,3,7,14,16,23,24,25,28,30
अक्षारंभ–16,17
शैक्षणिक संस्था में प्रवेश– 3,4,9,10,13,18,20,24
ट्यूबवेल कूप खनन– 2,3,16,24,25,30
शल्य चिकित्सा– 2,6,10,18,20,23,25,28,30
नवीनवस्त्रभूषण–2,16,23,30
औषधी सेवन– 3,6,7,12,13,14,18,23,24,26
वेदी प्रतिष्ठा मुहूर्त – 16 अप्रैल से 18 अप्रैल तक। 18 अप्रैल से 20 अप्रैल तक। 28 अप्रैल से 30 अप्रैल तक।
श्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा मुहूर्त – 19 अप्रैल से 24 अप्रैल तक। 28 अप्रैल से 3 मई तक।

**समाज की। समाज द्वारा। समाज के लिए**

djainmahasabha | djainmahasabha | djainmahasabha | djainmahasabha | digjainmahasabha.org

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES

SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD

ANAMICA TRADERS PVT. LTD.

L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)


# जयपुर में भ. आदिनाथ का धूमधाम से मनाया जन्म कल्याणक

**राजस्थान की राजधानी जयपुर में पहली बार 22 किलोमीटर मार्ग की निकली वाहन रथयात्रा - मार्ग में 51 स्थानों पर हुई महाआरती एवं पुष्प वर्षा**

**राजाबाबू गोधा, संवाददाता**

**जयपुर, 23 मार्च।** दिगम्बर जैन युवा एवं महिला संगठनों की प्रदेश स्तरीय पंजीकृत प्रतिनिधि संस्था राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के तत्वावधान में सकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) के जन्म कल्याणक दिवस (जन्म जयंती ) पर रविवार, 23 मार्च को राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर जयपुर में पहली बार विशाल वाहन रथयात्रा निकाली गई। यह वाहन रथयात्रा प्रतापनगर के सेक्टर-17 स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से रवाना होकर 22 किलोमीटर मार्ग की दूरी तय करते हुए मानसरोवर में मीरामार्ग के आदिनाथ भवन पर जाकर सम्पन्न हुई, समापन पर मीरा मार्ग के आदिनाथ भवन पर विशाल धर्म सभा हुई। प्रतापनगर के हल्दीघाटी मार्ग पर सेक्टर-17 स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से प्रातः 8.30 बजे समाजश्रेष्ठी एन. के. सेठी, सुधांशु कासलीवाल, विवेक काला एवं ज्ञान चन्द झांझरी ने जैन ध्वज दिखाकर इस विशाल वाहन रथयात्रा का शुभारंभ किया। इससे पूर्व मंदिर में सामूहिक दर्शन के बाद अभिषेक, शांतिधारा एवं महाआरती के आयोजन हुए। मंदिर समिति की ओर से मुख्य परामर्शक अशोक जैन नेता, मुख्य समन्वयक राजीव जैन गाजियाबाद एवं युवा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन, प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा, जिला अध्यक्ष संजय पाण्डया, जिला महामंत्री सुभाष बज आदि पूरी टीम का स्वागत एवं सम्मान किया गया। यह रथयात्रा हल्दीघाटी गेट, टोंक रोड, दुर्गापुरा, महावीर नगर, गोपालपुरा बाईपास, मानसरोवर के मध्यम मार्ग, न्यू सांगानेर रोड, बी टू बाई पास चौराहा, थड़ी मार्केट चौराहा, विजय पथ चौराहा सहित विभिन्न मार्गों से होते हुए अग्रवाल फार्म के मीरा मार्ग स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पहुंचकर शोभायात्रा में बदल गई। आदिनाथ मंदिर से भगवान आदिनाथ की प्रतिमा को लेकर बैण्डबाजों के साथ नाचते गाते आदिनाथ भवन पर पहुचे, जहां समापन पर धर्म सभा एवं श्री जी के कलशाभिषेक तथा महाआरती का भव्य आयोजन किया गया। इस वाहन रथयात्रा मार्ग पर शहर के 51 से अधिक दिगम्बर जैन मंदिरों एवं कई सामाजिक संगठनों, राजनीतिक दलों एवं विभिन्न समाजों द्वारा रथयात्रा पर पुष्प वर्षा तथा भगवान आदिनाथ के मुख्य रथ की आरती की गई। कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष संजय पाण्डया एवं जिला महामंत्री सुभाष बज ने बताया कि इस विशाल वाहन रथयात्रा में मार्ग में पुष्पक विमान से पुष्पवर्षा करवाई गई।

मुख्य परामर्शक अशोक जैन नेता एवं मुख्य समन्वयक राजीव जैन गाजियाबाद ने बताया कि विशाल वाहन रथयात्रा में भगवान आदिनाथ से सम्बंधित झांकियों सहित 24 तीर्थंकरों के रथ, भरत का भारत की झांकी, भजन मण्डलियां, लवाजमा, बैण्ड बाजे, नारे लिखी तख्तियां, डी. जे, विन्टेज कारे, बैनर, झण्डे, दो पहिया एवं चौपहिया वाहन, महिला मण्डलों के लिए ट्रेक्टर ट्रालियां आदि शामिल होकर भगवान आदिनाथ के श्रद्धालुओं ने गुणगान किये। धर्म सभा में अतिथि के रूप में उपस्थित राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन, कमल बाबू जैन, ज्ञान चन्द झांझरी, अशोक जैन नेता, राजीव जैन गाजियाबाद, विनय सोगानी, अशोक काला, विनीत चांदवाड, रोमी गोधा, प्रवीण बड़जात्या आदि ने झण्डारोहण एवं भगवान आदिनाथ के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन किया। युवा महासभा की ओर से प्रदीप जैन, विनोद जैन कोटखावदा, अनिल छाबडा, सीए दिनेश जैन, संजय पाण्डया, सुभाष बज, प्रवीण बड़जात्या, भारतभूषण जैन, महेश बाकलीवाल, मुकेश कासलीवाल, राजेन्द्र सेठी, महावीर सुरेन्द्र जैन, राज कुमार पाटनी, मनीष सोगानी आदि ने अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। तत्पश्चात विनोद जैन कोटखावदा ने अपने उद्बोधन में पहली बार आयोजित ऐतिहासिक वाहन रथयात्रा की विस्तृत जानकारी उपस्थित श्रद्धालुओं को दी। प्रदीप जैन ने स्वागत उद्बोधन एवं जिला अध्यक्ष संजय पाण्डया ने भगवान आदिनाथ के जन्म कल्याणक दिवस पर प्रकाश डाला। जयकारों के बीच श्री जी के कलशाभिषेक किये गये। श्री जी की माल का पुण्यार्जन लोकेन्द्र पाटनी राजभवन वाले परिवार ने किया। श्रद्धालुओं ने भक्ति पर झूमते हुए श्री जी महाआरती की। गायक गौरव जैन कुचामन के भक्तिमय भजनों पर पूरा सभागार नाच उठा। वाहन रथयात्रा में प्रारम्भ से दो पहिया एवं चौपहिया वाहन लेकर शामिल हुए महिला पुरुषों के लिए लक्की ड्रा पुरस्कार दिये गए। धर्म सभा में उपस्थित जैन बन्धुओं ने सरकार से आगामी वर्ष आदिनाथ जयन्ती पर सार्वजनिक अवकाश घोषित करने की मांग की। मंच संचालन विनोद जैन कोटखावदा एवं सुभाष बज ने किया। आभार मीरा मार्ग कमेटी के मंत्री राजेन्द्र सेठी ने दिया।

## 9 अप्रैल णमोकार दिवस एक वैश्विक आध्यात्मिक पहल

**राजेश जैन दद्दू**

**इंदौर।** यह जानकर पूरे विश्व में अपार हर्ष हो रहा है कि जीतो द्वारा 9 अप्रैल बुधवार 2025 को णमोकार मंत्र दिवस पूरे विश्व में एक साथ एक ही समय पर सामूहिक रूप से पूरे विश्व मनाया जाएगा। विश्व जैन संगठन के प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने कहा कि इस विशेष अवसर पर विश्व भर में जगह-जगह नमोकार मंत्र का जाप एवं ध्यान किया जाएगा, जिससे आध्यात्मिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार होगा। जैन दर्शन में प्रार्थना का मूल उद्देश्य चारित्र प्रधान जीवन जीना है। ''णमो लोए सव्व साहूणं'' - अर्थात लोक के समस्त साधुओं को नमन। इससे समग्र समाज में जागरूकता बढ़ेगी और धर्म का वास्तविक स्वरूप उजागर होगा। हो जाओ तैयार हम सब इस पावन अवसर पर णमोकार मंत्र के दिव्य प्रभाव को आत्मसात करें और इसे जन-जन तक पहुंचाकर णमोकार दिवस को सार्थक बनाएं।

## जैन धरोहर दिवस पर श्री गडकरी जी को आमंत्रण

दिनांक 21.03.202025 को नई दिल्ली में एक प्रतिनिधि मण्डल की श्री नितिन गडकरी जी (भारत सरकार सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री, भारत सरकार) से उनके आवास पर शिष्टाचार भेंट हुई और उन्हें मुम्बई में होने वाले प्रोग्राम जैन धरोहर दिवस (स्मृति दिवस श्री निर्मल कुमार जैन सेठी ) में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रण के लिए निवेदन किया गया, जिसको उन्होंने स्वीकार कर आने का पूर्ण आश्वासन दिया। प्रतिनिधि मण्डल में एडवोकेट श्री विकास जैन, उपाध्यक्ष-श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, श्री निर्मल कुमार जैन, महामंत्री- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन श्रुत संवर्धिनी महासभा, श्री सुमत जैन (लल्ला जी), सक्रेटरी- जैन राजनैतिक चेतना मंच, नागपुर, श्री वैभव जैन एवं डा. आशीष जी शामिल थे।

प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चारित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन् वंदन

सन्मतिसुनीलम

सुख इंसान के अहंकार और दुख इंसान के धैर्य की परीक्षा लेता है

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

- श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति किशनगढ़ सम्भाग
- राजकुमार बड़जात्या (मरवा वाले)
- मानकचंद गंगवाल (कडेल वाले)
- महावीर महिला मण्डल, किशनगढ़
- श्रीमती सरिता पाटनी, किशनगढ़
- हेमन्द्र कुमार एडवोकेट, बांसवाड़ा
- महावीर प्रसाद अजमेरा जैन गजट वरिष्ठ संवाददाता, जोधपुर
- विमल कुमार बड़जात्या, किशनगढ़ (मरवा वाले)
- कमल कुमार वैद (ज्वैलर्स)
- श्रीमती जया पाटनी पुराना हाउसिंग बोर्ड, किशनगढ़
- कुशल ठोल्या, जयपुर
- श्रीमती ममता सोगानी, जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी किशनगढ़ केसरी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

# फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के जिनालयों में जैन भगवान आदिनाथ का मनाया जन्म कल्याणक

## कस्बे में विराजमान आचार्य इंद्रनंदी जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में हुआ कार्यक्रम

**राजाबाबू गोधा, संवाददाता**

फागी कस्बे में विराजमान आचार्य 108 मुनि इंद्रनंदी महाराज, मुनि उत्कृष्ट नंदी महाराज, मुनि निर्भय नंदी महाराज तथा उपाध्याय मुनि विज्ञानंदी महाराज, मुनि पूर्णानंदी महाराज, मुनि धैर्य नंदी, मुनि शुभानंदी महाराज, मुनि धुर्वानंदी महाराज ससंघ सहित आठ पिच्छिकाधारी दिगम्बर संतों के पावन सानिध्य में, आर्यिका श्रुतिमति माताजी, आर्यिका सुबोधमति माताजी की पावन प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से 23 मार्च 2025 को भगवान आदिनाथ का जन्म जयंती महोत्सव सकल दिगंबर जैन समाज के सहयोग से हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में प्रातः अभिषेक शांतिधारा के बाद अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना करने के बाद विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम में रामस्वरूप-सिद्ध कुमार मोदी, पवन कुमार, सचिन

कुमार, सौरभ कुमार, देवांशु, अतिशय जैन मोदी परिवार को श्री जी का प्रथम कलश एवं मुख्य शांतिधारा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। नेमीचंद-पवन कुमार कागला परिवार को विधिनायक का प्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में नला वाला परिवार, कठमाना वाला परिवार, मोदी परिवार, चांदमा वाले कासलीवाल परिवार, झंडा परिवार, बजाज परिवार सहित समाज के विभिन्न परिवारों ने पंचामृत अभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त किया। कार्यक्रम में रामस्वरूप-कमलेश कुमार मंडावरा वाले परिवार जनों ने श्री जी को पालना झुलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। कार्यक्रम में आज आदिनाथ महामंडल विधान की पूजा अर्चना की गई जिसमें नवरत्न मल-विशाल जैन कठमाना परिवार ने सौधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य प्राप्त कर पुण्यार्जन प्राप्त किया तथा ईशान इंद्र पवन कुमार -राजकुमार कागला, सानत इन्द्र महावीर कुमार नला परिवार, महेंद्र इंद्र हनुमान लाल- मुकेश कुमार जैन कलवाड़ा वाले परिवारजनों बनने का सौभाग्य प्राप्त किया।

# चांदखेड़ी में आदिनाथ जयंती रथयात्रा महोत्सव में भजनों पर झूमते चले श्रद्धालु

**कोटा, 24 मार्च।** युग प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की जयंती रविवार को चांदखेड़ी में धर्म प्रभावना के साथ हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर चंद्रोदय तीर्थ चांदखेड़ी में आयोजित दो दिवसीय मेले में भगवान आदिनाथ की रथयात्रा निकाली गई। प्रतिष्ठाचार्य आशा दीदी द्वारा प्रारंभ में पूजा अर्चना करवाई गई। रथयात्रा के लिए भगवान आदिनाथ की प्रतिमा को रथ पर विराजमान किया गया। रथयात्रा चांदखेड़ी मंदिर से गाजे-बाजे के साथ प्रारंभ हुई। शोभायात्रा में मुनिश्री विशद सागर जी महाराज व मुनिश्री शिव सागर जी महाराज का सान्निध्य भी रहा। जगह-जगह पर श्रद्धालु उनका पाद प्रक्षालन करने के लिए होड़ करते नजर आए। आगे-आगे हाथों में धर्म पताकाएं लिए चल रहे घुड़सवार रथयात्रा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इसके पीछे बैंड बाजों पर बज रहे धार्मिक भजनों से माहौल धर्ममय हो गया। पूरे क्षेत्र में उमंग और उल्लास का माहौल बना रहा। धार्मिक भजनों पर श्रद्धालु नाजते गाते प्रभु भक्ति में लीन रहे। मेला संयोजक अशोक सेठी बारां वालों ने बताया कि रथयात्रा में सारोला, खानपुर व बारां का बैंड आकर्षण का केन्द्र रहा। भगवान आदिनाथ की नगर भ्रमण शोभायात्रा के मार्ग को रंगोली और स्वागत द्वारों से सजाया गया। रथयात्रा का सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक संगठनों ने पुष्पवर्षा कर पालकी में विराजित श्रीजी की आरती उतारकर स्वागत किया।

# प्रसिद्ध समाजसेवी इंजी. पी. सी. छाबड़ा सा. नि. वि. राजस्थान प्रयास के भारी बहुमत से अध्यक्ष निर्वाचित

**राजाबाबू गोधा, संवाददाता**

सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान वैलफेयर सोसाइटी के हुए द्विवार्षिक चुनाव (2025-27) के जबरदस्त मुकाबले में प्रसिद्ध समाजसेवी इंजी पी. सी. छाबड़ा ने शानदार विजय प्राप्त कर अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। यह संस्था गत् 8 वर्षों से सेवा में लीन हैं। प्रथम बार संस्था का पूरे राजस्थान व विदेशों में मौजूद सदस्यों के द्वारा अपने स्तर पर आनलाईन पद्धति से अपने मत का उपयोग कर चुनावों में सहभागिता निभाई जिसमें कुल 3 पदों अध्यक्ष, महासचिव एवं कल्चरल सचिव पद पर चुनाव हुए। उक्त चुनाव में महासचिव इंजी. आर. सी. शर्मा तथा कल्चरल सचिव इन्जी एन. के. सेठी ने भारी मतों से अपने निकटतम प्रतिद्वंदियों को हराकर जीत हासिल की है तथा अन्य पदों पर निर्विरोध निर्वाचन सम्पन्न हुआ। इस आनलाइन चुनाव में सभी सदस्यों में भारी उत्साह था और इस प्रकार 90 प्रतिशत पोलिंग हुआ तथा मतदान शांतिपूर्वक ढंग से सम्पन्न हुआ। इंजी. पी. सी. छाबड़ा जैन इन्जियरिंग सोसायटी इन्टरनेशनल फाउण्डेशन इन्दौर के राष्ट्रीय महासचिव भी हैं।

# सकल दिगंबर जैन समाज एस एफएस के द्वारा दो दिवसीय भव्य कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से हुआ संपन्न

**संवाददाता**

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ के जन्म जयंती महोत्सव पर एशिया की सबसे बड़ी कॉलोनी एस.एफएस.मानसरोवर में दिनांक 22 मार्च, शनिवार सायंकाल 7:00 बजे महाआरती एवं भक्तामर अनुष्ठान का कार्यक्रम भारतीय जैन युवा परिषद के सहयोग से भक्ति संध्या (साजबाज से) सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में वर्धमान दिगंबर जैन समिति के अध्यक्ष कमलेश जैन एवं मंदिर समिति के मंत्री सौभागमल जैन ने बताया कि द्वीप प्रज्वलन कर्ता श्रेष्ठि परिवार श्री अशोक जी-श्रीमती नीतू जी सिद्धार्थ जी रिया जी जैन कोटलर 4/168 SFS, देवेंद्र जी-अंजना जी अश्विन जी विशाखा जी दिविषा जी पापड़ीवाल परिवार सेवा वाले पत्रकार कॉलोनी 23 मार्च, रविवार प्रातः 6 बजे:- नित्य अभिषेक प्रातः 7.30 बजे:- नवनिर्मित चांदी की पालकी में भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) को विराजमान कर भव्य जुलूस में श्री जी के साथ सुसज्जित अश्वबगी जिसमें सौधर्म इंद्र के रूप में समाज श्रेष्ठि श्री सुमति प्रकाश जी मंजू जी काला बगी में बैठकर सुसज्जित इंद्र जैन धर्म की ध्वज लहराते हुए सुसज्जित अश्व पर सवार होकर चल रहे थे। श्रीमान कमलेश कुमार जी-श्रीमती सुशीला जी, श्री हितेश जी- श्रीमती अनीता जी कासलीवाल परिवार सुमेर नगर, श्री नितिन जी राखी जी श्री वेदांश जी जैन परिवार सुमेर नगर, साथ में आगे विभिन्न तरह के वाद्य मधुर यंत्र (बैंडबाजा) और साथ में सभी श्रद्धालु लोग धर्म की प्रभावना बढ़ाते हुए नगर भ्रमण कर जुलूस वापस मंदिर जी पर प्रातः 9.30 बजे पहुंचा। पश्चात् श्रीजी को पांडू शिला पर विराजमान कर 108 रजत कलशों से विभिन्न मंत्रोच्चारणों के साथ अभिषेक, शांतिधारा श्रीमान दिनेश जी ललित जी मुदित कुमार जी निवाई वाले जैन सुमेर नगर परिवार के द्वारा की गई। श्रीजी की माल पहनने का सौभाग्य श्रीमान हेमचंद जी श्री आयुष जी श्रीमती नीतू जी छाबड़ा राजावास परिवार वालों को सौभाग्य प्राप्त हुआ। दोपहर 12.30 बजे:- आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज के द्वारा रचित आदिनाथ विधान पूजन (साजबाज से) सांगानेर के प्रसिद्ध संगीतकार आदि जैन एवं विद्वान अजीत जैन भास्कर द्वारा संपन्न करवाई । विधान मंडल पर सौधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य श्रीमान सुभाष चंद्र जी श्रीमती शकुंतला जी के सुपुत्र श्रीमान अमित जी श्रीमती रितु जी सेठी को प्राप्त हुआ। जिनवाणी स्थापना श्रीमान हेमराज जी टीकमचंद जी माधोराजपुरा वाले, दीप प्रज्जवल पवन जी रूबी जी पाटनी लक्ष्मी नगर, मंडल पर चतुर्थ कलश स्थापना श्रीमान अशोक कुमार जी बाकलीवाल, संजय जी पाटनी, हेमराज जी टीकमचंद जी, अशोक जी पुष्पा जी कासलीवाल ने मंडल पर स्थापना की। कार्यक्रम में सायंकाल सामूहिक आरती का भव्य कार्यक्रम महिला मंडल एवं युवा मंडल द्वारा आयोजित किया।

# मंगलाचार कार्यक्रम का आयोजन

**मदनगंज किशनगढ़।** श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति के तत्वाधान में मंगलाचार कार्यक्रम का आयोजन मुनिसुव्रतनाथ मंदिर में किया गया। साथ ही मुनिसुव्रतनाथ पंचायत द्वारा पालना झूलाओ कार्यक्रम रखा गया। मोना झांझरी ने बताया कि कार्यक्रम में सर्वप्रथम पंचायत के अध्यक्ष विनोद पाटनी, मंत्री सुभाष बड़जात्या, महासमिति की अध्यक्ष सुलोचना कासलीवाल, कोषाध्यक्ष मीना सेठी, कार्यक्रम प्रभारी संगीता पापड़ीवाल, महिला महासभा की अध्यक्ष अनीता बाकलीवाल ने द्वीप प्रज्वलन कर विधिवत कार्यक्रम की शुरुआत की। मोना झांझरी, उषा गोधा, रीना रांवका ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में मोना पांडे, प्रांजल जैन, यशस्वी बोहरा, किरण जैन, रजनी अजमेरा ने बालक महावीर के जन्म और माता त्रिशला के 16 स्वप्न पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की। अदिति बाकलीवाल माता त्रिशला बनीं। कार्यक्रम में नयनतारा, अनीता कासलीवाल, प्रेम पांडे आदि ने महा समिति की सभी पदाधिकारी का तिलक लगाकर माला मुकुट पहनाकर स्वागत किया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी महिलाओं ने बड़ी भक्ति भाव से बालक वीर का पालना झुलाया। कार्यक्रम में महिला महासमिति की मंत्री सिम्पल बाकलीवाल, महावीर महिला मंडल की अध्यक्ष रश्मि छाबड़ा, शांतिनाथ महिला मंडल की मंत्री रेखा बाकलीवाल, मुनिसुव्रतनाथ नवयुवक मंडल की अध्यक्ष विभा पाटोदी, निशा रारा, करुणा झांझरी, आकांक्षा बज, रानू बज आदि महिला सदस्य उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के अंत में पंचायत के अध्यक्ष विनोद पाटनी ने सभी का आभार जताया।

**– शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता**

# आदिनाथ से महावीर घर-घर मंगलाचरण

**प्रतापनगर, जयपुर।** महिला मंडल की अध्यक्ष स्नेहलता सोगानी ने बताया कि मंदिर जी में आदिनाथ जयंती की पूर्व संध्या पर भक्तामर की 48 दीपक से आदिनाथ भगवान की आराधना एवं विधान और अब घर-घर मंगलाचरण का कार्यक्रम आदिनाथ की जन्मोत्सव पर बधाइयां, पालना झुलाना और रतन की बरसात की स्नेहलता सोगानी के घर से णमोकार और भजन प्रारंभ हुआ। सभी महिलाओं ने भक्तिभाव से पालना झुलाया, नाच गान कर आनंद प्राप्त किया। सभी महिलाओं का बहुत-बहुत आभार व्यक्त किया।

**– शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता**

# श्री नवीन नंदी जी मुनिराज को पावन चातुर्मास 2025 हेतु किया श्रीफल भेंट

**फागी संवाददाता**

बगरू। दिगम्बर जैन मंदिर दहमी कलां में विराजमान लादी देवी-चौथमल पाटनी अतिथि भवन महावीर नगर दहमी कलां बगरू में पावन चातुर्मास 2025 हेतु सकल दिगंबर जैन समाज बगरू ने सामूहिक रूप से जयकारों के बीच श्रीफल चढ़ाकर मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम में महावीर जी पाटनी, कुलदीप चौधरी, रमेश ठोलिया, रविकाला, प्रमोद बाकलीबाल, प्रदीप जैन, संदीप पाटनी, सोनू पाटनी, आशीष लुहाड़िया, मनोज पाटनी, गौरव कोटिया आदि उपस्थित थे।

# रानीला में भगवान श्री आदिनाथ जन्म कल्याणक महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया

23 मार्च 2025 को रानीला तीर्थक्षेत्र चरखी दादरी हरियाणा में भगवान श्री आदिनाथ जन्म कल्याणक महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्रीमान् गजराज जैन गंगवाल राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा थे। गंगवाल जी ने प्रभु आदिनाथ भगवान का अभिषेक एवं शांतिधारा की साथ में श्रीमान् पंकज जैन पारस चैनल थे। महोत्सव का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज गंगवाल जी ने किया। बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम ने सभी का मन मोह लिया। बाद में विशाल रथयात्रा निकाली गई। मुख्य अतिथि श्रीमान् गजराज गंगवाल जी ने कहा कि श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा 130 वर्ष पुरानी सबसे प्राचीन महासभा है। महासभा कई योजनाएं चला रही है जैसे कि आत्मनिर्भर योजना। उन्होंने बताया कि हम जैन समाज की अल्प साधन वाले व्यक्तियों को धन देकर उनको रोजगार का अवसर प्रदान करते हैं तथा महासभा जो बच्चे धन के अभाव में उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं उनको महासभा छात्रवृत्ति देकर प्रोत्साहित करती है।

# पूर्णाश्रय में हुई सुमन साहित्य समिति द्वारा काव्य गोष्ठी

**सनावद।** नगर की प्रतिनिधि साहित्यिक संस्था सुमन साहित्य समिति द्वारा भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के शहीद दिवस एवं डॉ. राम मनोहर लोहिया की जयंती के उपलक्ष्य में अनुपमा राजेंद्र जैन महावीर के नवनिर्मित भवन पूर्णाश्रय पर काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता जयप्रकाश जी जैन ने की। मुख्य अतिथि राधेश्याम जी बिरला पूर्व जिला आबकारी अधिकारी एवं विशेष अतिथि किशोरी लाल जी पटेल थे। काव्य गोष्ठी के शुभारंभ में कवि श्याम दीक्षित मधुप ने मां विमला की स्तुति सुमधुर प्रस्तुत की। संस्था अध्यक्ष कवि डॉ. धन्नालाल चौधरी धवल ने कहा - डॉ. राम मनोहर लोहिया से लोहा लेना था नहीं आसान। लोग आज तक कर रहे हैं उनके साहस का गुणगान। संस्था सचिव हुकुमचंद कटारिया आदर्श ने कहा कि आजादी की लड़ाई में लाखों क्रांतिकारियों ने जान गवाई। तब जाकर कहीं हमने आजादी पाई। कवि विजय महेश्वरी ने कहा-करोड़ों हिंदुस्तानियों की दुआएं काम कर गई। सुनीता विलियम्स सकुशल धरती पर आ गई। कवि श्याम दीक्षित मधुप ने कहा-साहसी, बलिदानी थे अंग्रेजों के काल। भगत सिंह राजगुरु सुखदेव फांसी पर झूल गए ये लाल। कवि रामचंद्र पगारे के गीत के बोल थे, ए वतन हमको तेरी कसम, तेरी राहों में जां तक लूटा जाएंगे। शायर जाकिर हुसैन अमि, कवि प्रेमलाल बिरला एवं कवि पंडित विष्णु रत्न चतुर्वेदी, राजेन्द्र जैन महावीर ने भी राष्ट्रीय रचनाओं का पाठ किया। काव्य गोष्ठी का सफल संचालन कवि हुकुमचंद कटारिया आदर्श ने किया। आभार राजेंद्र जैन महावीर ने व्यक्त किया।

# श्री आदिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया

**झुमरीतिलैया।** जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर देवाधिदेव 1008 श्री आदिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक महोत्सव चैत्र कृष्ण नवमी को बड़े ही भक्ति पूर्वक धूमधाम से जैन मंदिर में मनाया गया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालु भक्तजनों ने भाग लिया। महिलाएं लाल वस्त्र और पुरुष पीले केसरिया परिधान में पूजन में शामिल हुए।

जैन समाज के स्टेशन रोड और पानी टंकी रोड दोनों मंदिरों में आदिनाथ भगवान का जन्म तप कल्याण के शुभ अवसर पर विश्व शांति भक्तामर स्तोत्र के 48 श्लोक पर 48 परिवारों के द्वारा इंद्र बनकर 48 अर्घ्य और श्रीफल प्रभु चरणों में समर्पित किया गया एवं 48 दीपकों के द्वारा भक्तामर का पाठ करते हुए दीप समर्पित किया गया। आज प्रातः देवाधिदेव 1008 आदिनाथ भगवान की भव्य प्रतिमा पर प्रथम अभिषेक अनिक रौनक जैन कासलीवाल के परिवार के द्वारा किया गया और भगवान की पांडुक शिला

पर अष्टधातु से निर्मित आदिनाथ भगवान की अतिशय युक्त प्रतिमा का भी प्रथम अभिषेक एवं शांति धारा कैलाश चंद अनिल रौनक कासलीवाल परिवार के द्वारा किया गया। भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर अभिषेक शांति धारा का सौभाग्य विजय, नीलम जैन सेठी परिवार को मिला तत्पश्चात समाज के सभी लोगों ने विश्व कल्याण मंत्र के साथ भक्तामर विधान में भाग लिया। सौभाग्यवती महिलाओं ने मंगल कलश स्थापना किया। अखंड दीपक सुरेंद सरिता जैन काला परिवार ने प्रज्वलित किया। संगीतमय पूजन सुबोध, आशा जैन गंगवाल के मुखारविंद से हुआ। इस अवसर पर समाज के कोषाध्यक्ष सुरेंद्र जैन काला, पूर्व मंत्री ललित शेट्टी सुनील जैन सेठी, महिला संगठन की अध्यक्षा नीलम जैन सेठी, मंत्राणी आशा जैन गंगवाल, आशिका जैन कासलीवाल आदि अनेक लोग उपस्थित होकर भक्ति भाव पूजन में शामिल हुए। संध्या में भव्य आरती भजन के साथ भगवान का पालना झुलाने का सौभाग्य ललित नीलम जैन सेठी परिवार को प्राप्त हुआ। स्थानीय पंडित अभिषेक शास्त्री द्वारा श्री आदिनाथ भगवान की जीवनी पर शास्त्र प्रवचन और प्रश्न मंच कर सभी को पुरूस्कृत किया गया। भगवान ऋषभदेव से ही इस युग में मोक्षमार्ग प्रशस्त हुआ। समाज के मंत्री नरेंद्र जैन झांझरी, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र जैन काला, राज जैन छाबड़ा, पार्षद पिंकी जैन, मीडिया प्रभारी राज कुमार जैन अजमेरा, नवीन जैन ने सभी पुण्यार्जक परिवार एवं भक्तजनों को भगवान आदिनाथ के जन्म कल्याणक पर बधाई शुभकामनाएं दी।

# तीर्थों का संवर्धन हम सबकी जिम्मेदारी

-मुनिश्री प्रयोग सागरजी

**सनावद।** नगर में जन्मे निमाड़ गौरव मुनिश्री प्रयोगसागर महाराज इन दिनों अभाना जिला दमोह में प्रवासरत हैं। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री प्रयोग सागर जी के दर्शनार्थ राजेन्द्र जैन महावीर सनावद, जिला पंचायत दमोह के प्रतिनिधि अभिषेक जैन से मुनिश्री ने विस्तृत चर्चा में मुनिश्री ने कहा कि निमाड़ क्षेत्र धार्मिक संस्कृति से समृद्ध क्षेत्र है। निमाड़ में सिद्धवरकूट, पावगिरि ऊन, बावनगजा जैसे सिद्ध क्षेत्र हैं जहां से अनेक भव्यात्माओं ने निर्वाण पद प्राप्त किया है। निमाड़ में अनेक अतिशय क्षेत्र भी हैं। तीर्थों पर पहुंचकर समाजजन तीर्थों का संवर्धन करें, अपनी भक्ति का अर्घ्य समर्पित करें।

उल्लेखनीय है कि मुनिश्री प्रयोगसागर जी नगर में निवासरत सुधीर चौधरी के ज्येष्ठ पुत्र हैं, जो विगत 27 वर्षों से पद विहार कर जैन धर्म की प्रभावना कर अहिंसा के सन्देश को जन-जन में प्रेषित कर रहे हैं।

राजकीय अतिथि, कवि, हृदय, वात्सल्य मूर्ति, अभीक्षण ज्ञानपयोगी, आचार्य 108 श्री शशांक सागर जी मुनिराज अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में विराजमान हैं

## शशांक वाणी

**जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण, बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन, ऐसे आचार्य शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत शत नमन**

**अपने आप में मस्त रहो और काम में व्यस्त रहो, जिंदगी में क्या पता कौन कब बदल जाये**

### -: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

1. श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर, जयपुर)
2. पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
3. श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपर)
4. श्रेष्ठी अनूप चंद जैन (भुसावर वाले, जयपुर)
5. श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोलिया (मारूजी का चैक, जयपुर)

1. अरूण कुमार काला अध्यक्ष (कीर्ति नगर जयपुर)
2. अशोक चांदवाड, (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
3. भंवरी देवी काला ध.प. महेन्द्र काला, (स्वर्णपथ मानसरोवर जयपुर)
4. श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
5. प्रेमचन्द सुभाषचन्द लक्ष्मी बगड़ा (नेमीसागर कालोनी, जयपुर)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

# सम्पादकीय

# क्या एक सर्वशक्तिमान ईश्वर का अस्तित्व है?

'ईश्वर' शब्द के सुनते ही हमें जिन अर्थों का बोध होता है वे हैं- ऐश्वर्यशाली, वैभवशाली, सर्वशक्तिमान, स्वामी, अधिकारी, इस जगत का कर्ता हर्ता- विधाता आदि। इस लोक में जो दर्जा एक स्वतंत्र सम्राट का है वही परलोक में ईश्वर या परमेश्वर का माना जाता है। जैसे किसी राजवंश में जन्म लेने वालों को सम्राट पद अनायास प्राप्त हो जाता है, उसके लिये उन्हें कुछ भी प्रयत्न नहीं करना पड़ता, वैसे ही वह ईश्वर भी अनादिकाल से संसार के कारण क्लेश, कर्म, कर्मफल और वासनाओं से सर्वथा अछूता है, उनका विनाश कर देने से उसे ईश्वरत्व पद प्राप्त नहीं हुआ है, किन्तु सदा से ही उनसे वह सर्वथा रहित है। इसलिये वह सबसे बड़ा है, सबका गुरु है, सबका ज्ञाता है। जो संसारी जीव क्लेश, कर्म आदि को नष्ट करके मुक्त होते हैं, वे कभी भी उसके बराबर नहीं हो सकते। उसका ऐश्वर्य अविनाशी है, क्योंकि काल के द्वारा उसका कभी नाश नहीं होता। ऐसे अनादि-अनन्त पुरुष - विशेष को ईश्वर कहा जाता है। किन्तु जैन धर्म में इस प्रकार के ईश्वर के लिये कोई स्थान नहीं है। उसका कहना है -

**'नास्पृष्टः कर्मभिः शश्वद् विश्वदृश्वास्ति कश्चन।**
**तस्यानुपायसिद्धस्य सर्वथाऽनुपत्तितः ।।**
**8 ।। आप्तपरीक्षा**

अर्थात् कोई सर्वदृष्टा सदा से कर्मो से अछूता हो नहीं सकता, क्योंकि बिना उपाय के उसका सिद्ध होना किसी भी तरह नहीं बनता।

असल में ईश्वर को अनादि मानने के कारण उसे सदा कर्मो से अछूता माना गया है और चूंकि वह सृष्टि का रचयिता है इसलिये उसे अनादि माना गया है। किन्तु जैन धर्म किसी को इस विश्व का रचयिता नहीं मानता, जैसा कि हम पहले बतला आये हैं। अतः वह किसी एक अनादि सिद्ध परमात्मा की सत्ता से इंकार करता है। उसके यहां यदि ईश्वर है तो वह एक नहीं, बल्कि असंख्य है। अर्थात् जैन धर्म के अनुसार इतने ईश्वर हैं कि उनकी गिनती नहीं हो सकती। उनकी संख्या अनन्त है और आगे भी वे बराबर अनन्तकाल तक होते रहेंगे, क्योंकि जैन सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक आत्मा अपनी स्वतंत्र सत्ता को लिये हुये मुक्त हो सकता है। ये मुक्त जीव ही जैन धर्म के ईश्वर हैं।

पिछले वर्ष भूकम्प के कारण सुनामी की लहरों ने जबर्दस्त कहर बरपाया, जिसके कारण लाखों लोग मृत्यु की गोद में समा गये। इस घटना का समस्त विश्व में इतना व्यापक असर हुआ कि परम ईश्वर-भीरु लोगों के मन में भी ईश्वर के अस्तित्व के विषय में एक संदेह पैदा हो गया। उनके अनुसार अगर कोई सर्व शक्तिमान ईश्वर विश्व-ब्रह्माण्ड की समस्त घटनाओं को नियंत्रित करता है तो वह सुनामी को नियंत्रित क्यों नहीं कर सका? और अगर उस ईश्वर ने लाखों असहाय और निर्दोष लोगों का संहार करने के लिये सुनामी को एक अस्त्र के रूप में व्यवहार किया है तो ऐसे निर्दयी ईश्वर की भक्ति करने का, उसकी प्रार्थना करने का कोई तो ऐसे निर्दयी ईश्वर औचित्य है क्या?

नास्तिकों की तो दूर की बात है, परम आस्तिकों के मन को भी आज यह प्रश्न कुरेद रहा है। इस सन्दर्भ में केन्टरबारी के आर्चविशप और चर्च ऑफ इंगलैण्ड के प्रधान टावन विलियम्स ने अखबारों में लिखे एक लेख में सार्वजनिक रूप से यह प्रश्न उठाया है कि जो ईश्वर इतनी क्रूरता से लाखों असहाय लोगों पर इतना जुल्म ढा सकता है, उस पर हम कैसे विश्वास करें?

अतीत में भी भयंकर प्राकृतिक दुर्योगों ने मनुष्य के मन में ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में प्रश्नचिह्न लगा दिये थे। यूरोप के प्रसिद्ध लेखक भोलटेयर ने अपनी 'केण्डिड' नामक पुस्तक में इस प्रकार की घटना का जिक्र किया है। यह घटना भी सुनामी की तरह ही एक भयंकर घटना थी। सन् 1755 के 1 नवम्बर को पुर्तगाल के लिसबन नगर में एक भूकम्प हुआ था। उस दिन क्रिश्चियन लोगों का एक त्योहार था - 'ऑल सेन्ट्स डे।' इसलिये हजारों लोग जिनमें महिलायें और बच्चे भी थे लिसबन शहर के सभी गिर्जाघरों में एकत्रित हुये थे। भूकम्प के तीव्र झटके के कारण लिसबन शहर के सभी गिर्जाघर ध्वंसावशेष में परिणत हो गये और करीब 15 हजार लोग इन ध्वंसावशेषों के नीचे दबकर मर गये। लिसबन के इस भूकम्प ने 18वीं शताब्दी के यूरोप के बौद्धिक और आध्यात्मिक जगत में एक जबर्दस्त तहलका मचा दिया। सबसे ज्यादा विचलित हुये 18वीं शताब्दी के यूरोप के विख्यात चिन्तक और फ्रान्स के दार्शनिक भोलटेयर।

इस सन्दर्भ में जर्मनी के दार्शनिक लायेबनित्स ने जो कहा था उसका उल्लेख करना प्रासंगिक होगा। उन्होंने यह घोषणा की कि ईश्वर मंगलमय है और यह पृथ्वी उसकी सर्वोत्तम सृष्टि है। हालांकि भोलटेयर चर्च संगठन को घृणा की दृष्टि से देखते थे, परन्तु उन्होंने भी लायेबनित्स की इस घोषणा से अपनी सहमति व्यक्त की। अपने निवास स्थान फर्नि में उन्होंने एक छोटा सा गिर्जाघर का निर्माण किया और वहां नियमित रूप से ईश्वर की उपासना करते थे। किन्तु लिसबन के भयंकर भूकम्प ने ईश्वर के बारे में उनका मोह भंग कर दिया। लायेबनित्स की घोषणा को मिथ्या प्रमाणित करने के लिये और ईश्वर के विरुद्ध एक आध्यात्मिक विद्रोह की घोषणा करने के लिये उन्होंने सिर्फ 10 दिन में एक पुस्तक लिख डाली। पुस्तक का नाम था 'केण्डिड'।

इस पुस्तक की कहानी विशेष महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण है धर्म और ईश्वर के प्रति विश्वास की एक तीखी समालोचना - जो इस पुस्तक की विषय वस्तु है। कहानी का नायक केण्डिड एक जर्मन जमींदार की अवैध सन्तान है। वह एक दुर्ग में रहता था जहां उसके गृह-शिक्षक थे पांग्लोस नामक एक सज्जन। केण्डिड अपने ही पिता की वैध कन्या के साथ प्रेम करने लगा। फलस्वरूप उसे सजा के तौर पर उस दुर्ग से निकाल दिया गया। इसी बीच केण्डिड को अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ा। अंत में एक दिन उसके साथ उसके पुराने गृह-शिक्षक पांग्लोस की मुलाकात हो गई और दोनों ने संयुक्त रूप से प्रचलित धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध एक विद्रोह का श्रीगणेश किया।

केण्डिड और पांग्लोस की विचित्र अभिज्ञताओं के माध्यम से भोलटेयर यही प्रमाणित करना चाहते हैं कि मनुष्य जीवन की कठोर वास्तविकतायें एक मंगलमय ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं करती हैं। अगर ईश्वर मंगलमय होता और यह पृथ्वी ईश्वर की सर्वोत्तम सृष्टि होती, तब लिसबन के उस भूकम्प में छोटे-छोटे अबोध और निर्दोष शिशु क्यों दबकर मरते ? भोलटेयर की उस कहानी में ऐसी एक भी महिला चरित्र नहीं है जो बलात्कार की शिकार नहीं हुई हो या जिसे वेश्या बनने के लिये बाध्य नहीं किया गया हो। भोलटेयर ने उस पुस्तक में सभी पादरियों या धर्म गुरुओं पर दोषारोपण करते हुये उन्हें पाखण्डी और ठग बताया है तथा उन पर कामवासना में लिप्त होने का आरोप भी लगाया है। 'केण्डिड' नामक इस पुस्तक के प्रत्येक पन्ने पर मनुष्य की असह्य वेदना और नैतिक स्खलन का विस्तार से वर्णन किया गया है जिसका एक मात्र उद्देश्य यही प्रमाणित करना है कि ईश्वर नामक किसी सर्व शक्तिमान और मंगलमय सत्ता का कोई अस्तित्व ही नहीं है तथा यह जीवन और जगत किसी के द्वारा संचालित नहीं होता है।

आधुनिक युग विज्ञान का युग है।

विज्ञान ने सृष्टि की ईश्वरवादी (Theological) एवं तात्विक (Metaphysical) व्याख्याओं के स्थान पर प्रकृतिवादी (Naturalistic) और प्रतीतिवादी (Phenomenalistic) व्याख्या प्रस्तुत की है। वैज्ञानिकों की यह मान्यता है कि प्राकृतिक घटनाएं किसी अति प्राकृतिक सत्ता की मनमानी इच्छा से संचालित नहीं होती हैं और न वे किसी उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त घटती हैं। प्रकृति के नियम अटूट और अनुलंघनीय हैं अतएव किसी ईश्वर की दया और अनुकम्पा के लिये कोई स्थान नहीं है। प्रकृति का विधान अटल है। उसे कोई ईश्वर भी नहीं बदल सकता है। आधुनिक विज्ञान अनास्था और निरीश्वरवाद का पोषक है। फ्रायड आदि मनोविश्लेषकों की मान्यता है कि मनुष्य केवल अपनी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति के निमित्त ईश्वर की कल्पना करता है। धर्म शैशव में प्रतिगमन (Regression) है और ईश्वर मात्र पिता की प्रतिमा है। (God is nothing but fathers image - Freud) बच्चा जिस प्रकार पिता पर निर्भर करता है, वही मनोभाव धार्मिक व्यक्ति में व्याप्त हो जाता है तथा वह एक सहारे की तलाश करता है और इस प्रकार पिता के प्रतिरूप ईश्वर की कल्पना कर लेता है। अतएव ईश्वर मात्र भ्रम है और धर्म मात्र पागलपन और कर्मकाण्ड मानसिक बाध्यता (Compubsion) की उपज है। फ्रायड ने लिखा है।

"Religion is the mass obsessional neurosis of mankind and it is bound to disappear with the knowledge of reabityíí

**जैन दर्शन की प्रकृति पूर्णतः** वैज्ञानिक है। यह अंधविश्वास के स्थान पर सम्यक्दर्शन और सम्यक्ज्ञान पर जोर देता है। यह खुले दिमाग से तत्व को जानने की चेष्टा करता है। इसका दृष्टिकोण न तो अंधविश्वासी है और न पक्षपातपूर्ण ही। भगवान महावीर ने कहा है ''पन्ना सम्मिक्खए धम्मं तत्तं तत्तं विनिश्चयम।'' अर्थात् प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करनी चाहिए और तत्व से तत्व का विनिश्चय करना चाहिये।

विज्ञान में इन्द्रिय दृष्टि और बुद्धि दृष्टि को ही महत्व दिया गया है। परन्तु जैन दर्शन में मति के साथ ही साथ श्रुति, अवधिज्ञान, मनः पर्यय और केवलज्ञान पर भी जोर दिया गया है। अतएव इसमें केवल प्रतीति का ही ज्ञान नहीं होता बल्कि सत्ता का भी ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

विज्ञान की भांति जैन दर्शन भी जगत की स्वभाववादी व्याख्या करता है । वट्टकेदि के अनुसार 'लोओ अकटिट्मो खलु अणाई निहणो। सहाव णिप्पणो ताल रूक्ख संठाणो।' अर्थात् लोक अकृत्रिम है, सब कुछ अनादि और अविनश्वर है, वस्तुतः स्वभाव से निष्पन्न है और ताड़ के पेड़ के भांति खड़ा है। विज्ञान जिस प्रकार निरीश्वरवादी है, उसी प्रकार जैन दर्शन भी निरीश्वरवादी है। इसमें भी माना गया है कि जगत का सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता कोई ईश्वर नहीं है । जगत स्वभाव से निष्पन्न है और स्वभाव से कार्य करता है। ईश्वर की धारणा राजतंत्र की देन है। जिस प्रकार राज्य को चलाने के लिये राजा की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार सृष्टि को चलाने के लिये भी एक राजा की आवश्यकता है, और इसी धारणा ने ईश्वर के प्रत्यय को जन्म दिया है। जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक आत्मा ही ईश्वर है, आत्मा ही परमात्मा है (अप्पा सो परमप्पा)। किसी ब्रह्म का अंश होने के कारण आत्मा परमात्मा नहीं है, बल्कि अपने अंदर अनंत चतुष्टय की उपस्थिति के कारण है। जैन धर्म-दर्शन फ्रायड की भांति धर्म को मनोविकार और पागलपन नहीं मानता, बल्कि इसे एक स्वस्थ प्रक्रिया मानता है। धर्म आत्म लाभ है। यह 'स्व' में होना या स्वस्थ होना है।

धर्म स्वभाव है।

सारांश यह है कि जैन धर्म में ईश्वर रूप से माने हुए अर्हन्तों और मुक्तात्माओं का उस ईश्वरत्व से कोई सम्बन्ध नहीं है जिसे अन्य लोग संसार के कर्ता हर्ता ईश्वर में कल्पना किया करते हैं। उस ईश्वर त्व की तो जैन दर्शन के विविध ग्रन्थों में बड़े जोरों के साथ आलोचना की गई है। इसमें इस तरह के ईश्वर के लिये कोई स्थान नहीं है।

**- कपूरचन्द जैन पाटनी**
**प्रधान सम्पादक**

# गुस्से की दवा

एक स्त्री थी। उसे बात बात पर गुस्सा आ जाता था। उसकी इस आदत से पूरा परिवार परेशान था। उसकी वजह से परिवार में कलह का माहौल बना रहता था। एक दिन उस महिला के दरवाजे एक साधु आया। महिला ने साधु को अपनी समस्या बताई। उसने कहा, 'महाराज! मुझे बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है। मैं चाहकर भी अपने गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख पाती। कोई उपाय बताइये।'

साधू ने अपने झोले से एक दवा की शीशी निकालकर उसे दी और बताया कि जब भी गुस्सा आये। इसमें से चार बूंद दवा अपनी जीभ पर डाल लेना। 10 मिनट तक दवा को मुंह में ही रखना है। 10 मिनट तक मुंह नहीं खोलना है, नहीं तो दवा असर नहीं करेगी। महिला ने साधु के बताए अनुसार दवा का प्रयोग शुरू किया। सात दिन में ही उसकी गुस्सा करने की आदत छूट गयी। सात दिन बाद वह साधु फिर उसके दरवाजे आया तो महिला उसके पैरों में गिर पड़ी। उसने कहा, महाराज! आपकी दवा से मेरा क्रोध गायब हो गया। अब मुझे गुस्सा नहीं आता और मेरे परिवार में शांति का माहौल रहता है। तब साधु महाराज ने उसे बताया कि वह कोई दवा नहीं थी। उस शीशी में केवल पानी भरा था।

शिक्षाः गुस्से का इलाज केवल चुप रहकर ही किया जा सकता है क्योंकि गुस्से में व्यक्ति उल्टा सीधा बोलता है, जिससे विवाद बढ़ता है इसलिए क्रोध का इलाज केवल मौन है।

# जैन गजट द्वारा चर्याशिरोमणी आचार्यश्री विशुद्ध सागर जी विशेषांक का प्रकाशन

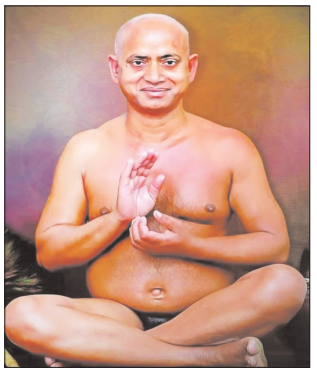

**पूज्य मुनि श्री सुप्रभ सागरजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक जैन गजट का समाधिस्थ पूज्य आचार्यश्री विराग सागर जी महाराज संघ के नये पट्टाचार्य चर्या शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज विशेषांक का प्रकाशन सुमति धाम, गोधा एस्टेट इन्दौर मध्य प्रदेश में 27 अप्रैल से 2 मई 2025 तक होने जा रहे पट्टाचार्य पदारोहण महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित होने जा रहा है जिसका विमोचन इन्दौर में होने जा रहे पट्टाचार्य पदारोहण महोत्सव के अवसर पर किया जायेगा। इस महोत्सव से पूरे देश भर से समस्त परम्पराओं के महान संतों के बड़ी संख्या में पधारने की संभावना है।**

**यह विशेषांक सौभाग्यशाली पुण्यार्जकों के सहयोग से होगा जिसकी एक पृष्ठ की पुण्यार्जक सहयोग राशि आमंत्रित शुल्क 20,000/- के स्थान पर मात्र 10,000/- रूपये है। जिसमें आपका फोटो एवं नाम, पता चर्या शिरोमणी आचार्यश्री संबंधी लेख वाले पृष्ठ के नीचे सौजन्य के रूप में प्रकाशित किया जायेगा जिसके लिये आपका सहयोग सादर आमंत्रित है।**

**यह सहयोग राशि मात्र इसी विशेषांक के लिये निर्धारित की गई है।**

**इस विशेषांक में जैन गजट की पूर्व निर्धारित विज्ञापन दरों यथा फुल पेज 20,000/-, आधा पेज 12000/, चौथाई 6000/-, के एवं छोटे विज्ञापन 2100/-, 1500/- के विज्ञापन भी सादर आमंत्रित हैं।**

**समाज के श्रेष्ठी दानवीर महानुभावों से निवेदन है कि इसके लिये पुण्यार्जन राशि, सहयोग राशि एवं विज्ञापन भेजकर सहयोग प्रदान करें।**

परम पूज्य आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताओं से निवेदन है कि इसके लिए अपने संस्मरण, लेख, कवितायें एवं आचार्य श्री एवं संघ से संबंधित फोटो आदि निम्नलिखित वाट्सएप नं. या ईमेल पर या कोरियर से भेजकर सहयोग प्रदान करें। सम्पर्क -जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ-226004 उ. प्र. 9415108233, 9415008344, 7505102419, 7607921391

# बायो-क्लॉक: आपके जीवनकाल और स्वास्थ्य को नियंत्रित करने वाली शक्ति

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

मनुष्य का शरीर एक अद्भुत मशीन की तरह काम करता है, जिसकी एक आंतरिक घड़ी (Bio-Clock) होती है। यह घड़ी हमारे दैनिक क्रियाकलापों, आदतों और सोच के अनुसार काम करती है। वैज्ञानिक रूप से भी यह सिद्ध हो चुका है कि हमारे विचार, विश्वास और मानसिकता हमारे स्वास्थ्य और जीवनकाल को प्रभावित करते हैं। कई लोग बिना अलार्म के सुबह तय समय पर उठ जाते हैं, क्योंकि उनका मस्तिष्क उनकी बायो-क्लॉक को उसी हिसाब से संचालित करता है। इसी तरह, यदि हम अपनी सोच और विश्वास को इस रूप में ढाल लें कि हम 100 वर्ष तक स्वस्थ और ऊर्जावान रहेंगे तो हमारा शरीर भी उसी दिशा में कार्य करने लगेगा।

आज हम इस लेख में बायो-क्लॉक की शक्ति, इसके वैज्ञानिक और धार्मिक दृष्टिकोण और इसे सही तरीके से सेट करने के उपायों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

1. बायो-क्लॉक क्या है और यह कैसे काम करती है?

हमारी बायो-क्लॉक (Bio-Clock) हमारे शरीर की एक अदृश्य घड़ी है, जो हमारे विचारों और विश्वासों से संचालित होती है।

उदाहरण के लिए जब हमें सुबह जल्दी उठना होता है तो हम अलार्म लगाते हैं, लेकिन अक्सर अलार्म बजने से पहले ही हमारी नींद खुल जाती है। इसका कारण यह है कि हमारा मस्तिष्क बायो-क्लॉक के अनुसार हमें जागृत करने के लिए शरीर की आंतरिक प्रणाली को निर्देश देता है। बायो-क्लॉक (Biological Clock) का सीधा संबंध हमारे शरीर की आंतरिक समय-सारणी से है। यह घड़ी हमारे शरीर की विभिन्न जैविक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करती है, जैसेः नींद और जागने का समय।

- हृदय गति और रक्तचाप का नियंत्रण
- पाचन तंत्र की कार्यप्रणाली
- ऊर्जा स्तर और चयापचय (Metabolism)
- मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक संतुलन

यदि हम अपने मन में यह विश्वास बना लें कि हमें 60 की उम्र में सभी बीमारियाँ घेर लेंगी तो हमारा शरीर उसी के अनुसार प्रतिक्रिया देने लगेगा। इसे ''नकारात्मक बायो-क्लॉक सेट करना'' कहा जाता है।

**उदाहरण:** कई लोग 50-60 की उम्र आते ही यह मान लेते हैं कि अब उनका शरीर कमजोर हो गया है और इस सोच के कारण वे सच में बीमार पड़ने लगते हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ लोग 75-80 की उम्र में भी पूरी तरह सक्रिय और स्वस्थ रहते हैं क्योंकि उनकी मानसिकता सकारात्मक होती है।

**महात्मा गांधी का उदाहरण:** महात्मा गांधी एक साधारण आहार लेते थे और अपने मन को पूर्ण रूप से नियंत्रण में रखते थे। उन्होंने अपनी बायो-क्लॉक को इस तरह सेट किया था कि 70 वर्ष की उम्र में भी वे युवा और ऊर्जावान दिखते थे।

2. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:** बायो-क्लॉक और उम्र का संबंध विज्ञान भी इस बात को प्रमाणित करता है कि हमारी सोच और मानसिकता हमारे स्वास्थ्य और जीवनकाल को प्रभावित करती है।

**प्लेसिबो इफेक्ट (Placebo Effect):** यह वैज्ञानिक प्रयोगों में पाया गया है कि जब किसी व्यक्ति को नकली दवा (जो असल में सिर्फ शक्कर या पानी होती है) यह कहकर दी जाती है कि यह एक शक्तिशाली इलाज है, तो वह व्यक्ति सच में ठीक होने लगता है।

**कारण:** उसका मस्तिष्क और बायो- क्लॉक यह मान लेती है कि वह स्वस्थ हो रहा है और शरीर उसी अनुसार प्रतिक्रिया देने लगता है।

**नसीबो इफेक्ट (Nocebo Effect ):** जब कोई व्यक्ति यह मान लेता है कि वह बीमार है, भले ही वह पूरी तरह स्वस्थ हो तो उसका शरीर धीरे-धीरे बीमारियों को जन्म देने लगता है।

**निष्कर्ष:** हमारी मानसिकता हमारी शारीरिक स्थितियों को प्रभावित करती है।

**2. बायो- क्लॉक और जीवनकाल का संबंध:** बहुत से लोग यह मानकर चलते हैं कि वे 80-90 साल तक जीएंगे। कुछ लोग अपने दिमाग में यह सेट कर लेते हैं कि 50-60 की उम्र आते ही बीमारियाँ उन्हें घेर लेंगी और वे जल्दी मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगे। वास्तव में, यह उनकी गलत बायो-क्लॉक का परिणाम होता है। जो व्यक्ति विश्वास करता है कि वह जल्दी बूढ़ा हो जाएगा, उसका शरीर उसी अनुसार करना शुरू कर देता है।

**चाइना का उदाहरण:** चीन में कई लोग 100 वर्ष की आयु तक स्वस्थ रहते हैं, क्योंकि उनकी बायो-क्लॉक उसी अनुसार सेट रहती है। वे अपने मन में यह धारणा बनाकर रखते हैं कि लंबे समय तक स्वस्थ रहना संभव है। उनका विश्वास ही उनकी लंबी उम्र का कारण बनता है।

**2. बायो-क्लॉक को सही तरीके से सेट करने के उपाय:** अपनी सोच और विश्वास को इस तरह ढालें कि आप कम से कम 100 साल तक जी सकें। याद रखें- ''Age is just a number-'' ''Old age is just a mindset'' कुछ लोग 75 वर्ष की आयु में भी खुद को जवान महसूस करते हैं, जबकि कुछ 50 वर्ष में ही खुद को बूढ़ा मान लेते हैं। आपकी सोच ही आपकी वास्तविकता बनती है।

**1. हमेशा सकारात्मक सोचें और आयु को सीमित न करें:** अपनी सोच को इस तरह ढालें कि आप कम से कम 100 वर्ष तक स्वस्थ रहेंगे।

''Old Age is Just a Mindset'' - बढ़ती उम्र का मतलब यह नहीं कि आप बूढ़े हो गए।

**उदाहरण:** स्वामी विवेकानंद ने कहा था ''जिस प्रकार आप सोचते हैं, आप वैसे ही बन जाते हैं।'' यदि आप स्वयं को हमेशा जवान महसूस करेंगे तो आपका शरीर उसी अनुसार प्रतिक्रिया करेगा। अपने भीतर यह विश्वास बनाएं कि आप बीमारियों से मुक्त 40 से 60 वर्ष की उम्र के बीच हमें यह विश्वास बना लेना चाहिए कि जो भी बीमारियाँ पहले हुई थीं, वे अब समाप्त हो चुकी हैं। हमारी बायो-क्लॉक को इस तरह से सेट करना चाहिए कि हमारा शरीर बीमारियों से खुद को मुक्त कर सके।

**उदाहरण:** जापान में 100 वर्ष से अधिक जीने वाले लोग अपनी मानसिकता और आहार - शैली को नियंत्रित करके स्वस्थ रहते हैं।

**अपनी जीवनशैली को ऊर्जावान रखें:** सुबह जल्दी उठें और योग, ध्यान, प्राणायाम करें। अपने खान-पान का ध्यान रखें और जंक फूड से बचें। खुद को हमेशा सक्रिय रखें, दिन में कम से कम 30 मिनट टहलें या व्यायाम करें।

**उदाहरण:** ब्रुस ली कहते थे ''अगर आप हर दिन अपने शरीर को सही तरीके से इस्तेमाल नहीं करते तो यह जंग लगने लगेगा।'' अपने लुक और पहनावे पर ध्यान दें। हमेशा अपनी वेशभूषा को ऐसा रखें कि आप जवान नजर आएं। ढीले-ढाले कपड़े पहनने से बचें। अपनी बॉडी लैंग्वेज को आत्मवियश्वास से भरपूर रखें।

**उदाहरण:** अमिताभ बच्चन 80 वर्ष की उम्र में भी उतने ही एक्टिव हैं, जितने वे 40 वर्ष की उम्र में थे।

**कारण:** उनका आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच और जीवन शैली।

**अपने मस्तिष्क को प्रशिक्षित करें (Train Your Mind):** हम जैसा अपने मन में सोचते हैं, हमारा शरीर उसी के अनुसार प्रतिक्रिया करता है। हर दिन स्वयं से यह कहें: ''मैं स्वस्थ हूँ, ऊर्जावान हूँ, और 100 वर्ष तक जीने के लिए पूरी तरह सक्षम हूँ। मेरा शरीर हर दिन पहले से अधिक शक्तिशाली हो रहा है।''

**उदाहरण:** जापानी लोग अपने दिमाग को इस तरह प्रशिक्षित करते हैं कि वे 100 वर्ष की उम्र में भी स्वस्थ रहते हैं। कभी भी अपनी बायो-क्लॉक को मृत्यु के लिए सेट न करें। अपने मस्तिष्क को यह निर्देश कभी न दें कि आपकी आयु कम होगी। अगर हम यह सोच लें कि हमारी उम्र कम होगी तो हमारा शरीर उसी अनुसार प्रतिक्रिया देना शुरू कर देगा। हम जैसा सोचते हैं, हमारे शरीर की सारी प्रक्रियाएँ उसी हिसाब से काम करने लगती हैं।

4. **धार्मिक दृष्टिकोण:** आयु और मानसिकता का प्रभावः भगवद गीता में कहा गया हैः ''योगः कर्मसु कौशलम्'' - अर्थात जो अपने मन और शरीर को संतुलित रखता है, वह जीवन में सफल होता है। जिन महात्माओं और संतों ने अपने शरीर पर नियंत्रण किया वे 100 वर्ष से भी अधिक जिए। ऋषि-मुनि और तपस्वी अपनी बायो-क्लॉक को नियंत्रित करके वर्षों तक जीवित रहते थे।

5. **निष्कर्ष: अपनी बायो-क्लॉक को सही दिशा में सेट करें:** बुढ़ापा कोई शारीरिक समस्या नहीं, बल्कि मानसिकता का परिणाम है। जो व्यक्ति अपनी सोच को सकारात्मक बनाए रखता है, वह अधिक समय तक स्वस्थ रहता है। हम अपने विश्वासों और आदतों को नियंत्रित करके अपनी बायो-क्लॉक को 100 वर्षों तक जीने के लिए सेट कर सकते हैं।

- अपने मस्तिष्क को निर्देश दें कि आप हमेशा स्वस्थ और ऊर्जावान रहेंगे।
- अपनी जीवनशैली को अनुशासित करें।
- हमेशा सकारात्मक सोचें और खुश रहें।

**हमेशा सकारात्मक सोचें और स्वस्थ रहें:** हमारे जीवन की गुणवत्ता हमारी सोच पर निर्भर करती है। हम अपने विचारों से अपनी उम्र और स्वास्थ्य को नियंत्रित कर सकते हैं। इसलिए हमेशा सकारात्मक सोचें, स्वस्थ जीवन जिएँ, और अपनी बायो-क्लॉक को दीर्घायु के लिए सेट करें। आप सभी स्वस्थ और दीर्घायु रहें।

**जैन गजट को शीघ्र आवश्यकता है**

1895 से प्रकाशित हो रहे जैन समाज के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले जैन गजट साप्ताहिक के सदस्य बनाने, विज्ञापन बुक करने एवं जैन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समाचार भेजने हेतु देश भर में जगह जगह संवाददाताओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक कमीशन एवं अन्य लाभ योग्यतानुसार। आवेदन जैन गजट के वाट्सऐप नं. 7505102419 या 9415108233 पर भेजिये। आवेदन प्राप्त होने पर आपसे संपर्क किया जावेगा।

संपर्क - जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ,
मो. 9415008344, 7607921391, 7505102419,
Email- jaingazette2@gmail.com
www.jaingazette.com

# महिलारत्न सप्तम प्रतिमाधारी : जीवन परिचय

# कमला देवी धाकड़ा (छाबड़ा)

## निवासी सीकर, प्रवासी चेन्नई , बंगलोर : प्रेरणादायक पृष्ठभूमि

अनीता धाकड़ा, चेन्नई

श्रीमती कमला देवी धाकड़ा का जन्म राजस्थान के मंढा (दाता) नामक ग्राम में श्रीमान जोहरीमल जी के यहां हुआ। चुनौतियों का दौर आपके जीवन में बचपन में ही प्रारंभ हो गया था। मात्र दो या तीन साल की उम्र में ही आपकी मां का देहांत हो गया था पर भरेपूरे परिवार में अत्यंत लाड़ प्यार से आपका पालन पोषण हुआ। बात तकरीबन 95 वर्ष पुरानी है उस समय किसी काम के सिलसिले में सीकर के राज दरबार में उनके पिताजी को जाना था, तो बच्ची कमला भी पिताजी के साथ राज दरबार गई थीं। जहां उनकी मोहक सुंदरता और सुलभ चंचलता को देखकर सीकर के राजा ने अपने खजांची के बेटे के लिए उनके रिश्ते की बात कही और मात्र 6 साल की नन्हीं सी अवस्था में उनकी सगाई सीकर निवासी हनुमानबक्श जी धाकड़ा के इकलौते पुत्र चिरंजीव रतन लाल जी धाकड़ा के साथ हो गई। 13 वर्ष की आयु में वे शादी करके धाकड़ा परिवार की बहू के रूप में सीकर पहुंचीं। बला की सुंदरता और धार्मिक संस्कारों से गढ़ी, गृह कार्य में दक्ष बहु कमला जल्दी ही घर के सभी सदस्यों की आंखों का तारा बन गई। उनके पति श्रीमान रतन लाल जी धाकड़ा बहुत ही जिंदादिल एवं राजसी ठाठ रखने वाले व्यक्ति थे, मां बताती हैं कि कोलकाता से धुलकर आए कुर्ते में हीरे का बटन, पन्ना का कंठा पहनकर वे जब बग्गी में जाते थे तो किसी राजपुरुष से कम नहीं लगते थे। संगीत सुनने, इत्र लगाने इत्यादि का उन्हें बहुत शौक था। उस जमाने में इटली से मँगाए ग्रामोफोन एवं फैंसी लाइट आज भी सीकर घर में उनकी यादों को ताजा करती हैं।

जीवन इतनी ज्यादा सुख संपन्नता से बीत रहा था कि न जाने किसकी काली नजर उन पर पड़ी और मात्र 31 वर्ष की अल्प आयु में तीन नन्हे बच्चों एवं गर्भवती पत्नी को अकेला छोड़कर श्रीमान रतन लाल जी धाकड़ा का कोलकाता में हृदय गति रुक जाने की वजह से देहावसान हो गया। मां बताती हैं कि इस दारुण खबर को सुनकर पूरा सीकर शहर इस कदर सदमे में आ गया था कि उस टेलीग्राम को लेकर मां के पास आकर उन्हें इस खबर को देने की किसी की हिम्मत नहीं थी। सभी का यही कहना था कि बच्चे इतने छोटे हैं, खुद गर्भवती है, कैसे इस दुखद खबर को झेल पाएगी?

तब उनके सबसे बड़े सुपुत्र चि. नवल 12 साल के थे, चि. पदम 10 साल के थे और चि. महेंद्र मात्र 5 वर्ष के थे, पर शायद धार्मिक संस्कारों का ही प्रभाव रहा होगा कि मां ने अत्यंत धैर्य और साहस से स्थिति को संभाला, खुद के दादा ससुर और तीन छोटे बच्चों को संभालते हुए पुत्री विमला को जन्म दिया। बदनसीब ने अभी भी पीछा नहीं छोड़ा था, अत्यंत प्रभावशाली सुदृढ़ एवं दृढ़ निश्चयी पुत्र चिरंजीव नवल धाकड़ा को न जाने ऐसी किस बीमारी ने घेरा कि जयपुर ले जाकर लंबी सेवा एवं इलाज के बाद भी 19 वर्ष के जवान पुत्र को उन्होंने खो दिया। उसके बाद तो एक तरह से मां तन मन और धन से लगभग खाली सी हो गई थीं। हताशा और निराशा की पराकाष्ठा तो थी पर धैर्य और साहस के साथ फिर भी वे खड़ी रहीं। धीरे से जिंदगी की गाड़ी पटरी पर आई, बच्चों ने काम संभाला। बड़े पुत्र पदमचंद जी धाकड़ा ने पहले कोलकाता में नौकरी की फिर जल्दी ही उनकी समझ में आ गया कि नौकरी करना उनके बस का काम नहीं तो उन्होंने मद्रास आकर आयरन एवं स्टील का काम प्रारंभ किया। वहीं छोटे पुत्र महेंद्र कुमार जी भी आ गए और इस व्यापार को आगे बढ़ाया। मां की मेहनत, तपस्या और कठिन परीक्षा का सफल परिणाम आया। पुत्रों ने व्यापार में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की की। भरपूर नाम एवं पैसा कमाया। मां के संस्कारों में पले बच्चों में भी वही मुनिसेवा एवं अतिथि सत्कार के गुण भरे हैं। पूरा परिवार धर्मनिष्ठा से जुड़ा है। परम मुनिभक्त हैं, मंदिरों के निर्माण, प्रतिमा स्थापन, विधान पूजा आदि रचाने में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। यह मां की ही शिक्षा है कि आज भी घर में रात्रि भोजन एवं जमीकंद का निषेध है। चाहे कोई भी मेहमान आए उन्हें रात्रि में भोजन नहीं परोसा जाता।

माला जाप विधान पूजा और गुरु सेवा मां के जीवन का आधार रहा है। जिन धर्म में अगाढ श्रद्धा की धनी मां कमला देवी न सिर्फ एक दानवीर महिला हैं बल्कि अतिथि सत्कार में बेजोड़ हैं। सरल स्वभावी होने के साथ परम मुनि भक्त हैं। चौका लगाना, आहार देना, साधु सेवा करना, विधान पूजा रचाना, घर के सभी सदस्यों को स्तोत्र पाठ आदि पढ़ना सिखाना ही उनके जीवन का ध्येय है। परम पूज्य आचार्य धर्म सागर जी महाराज से विशेष रूप से जुड़ी हुई थीं। उनकी समाधि के पहले उनका अंतिम आहार भी इन्हीं के हाथों सीकर घर में हुआ था। सीकर या मद्रास में जिन भी साधुओं के चरण पड़े यह सुनिश्चित है कि उनका आहार घर पर हुआ ही है। श्रवणबेलगोला इत्यादि क्षेत्रों में साल साल भर रहकर चौका लगाती हैं, सभी साधुओं को आहार देने की प्रबल भावना उनकी हमेशा बनी रहती है।

जीवन में संघर्ष का चाहे कोई भी रूप चला हो पर अतिथि सत्कार में मां एक मिसाल है। कहते हैं कि एक समय मां के जीवन में ऐसा भी आया था, जब आर्थिक संकट बहुत था घर में चाचा ससुर, दादा ससुर की मृत्यु पर भोज इत्यादि का खर्च हो, बच्चों की पढ़ाई, पालन पोषण या शादी की बात हो मां ने हल्का काम कभी नहीं किया, कर्तव्य निष्ठा एवं काम के प्रति जुनून मां से सीखने लायक सबक है। अपने बच्चों के आर्थिक रूप से संपन्न होने के पहले पहले मां ने अपनी सभी जिम्मेदारियां अपने बूते पर पूरी कर ली थीं। जैन शास्त्रों में वर्णित करीब-करीब सभी व्रत मां ने पूरे किए हैं, पिछले कई दशकों से महीने में कम से कम 8 या 10 उपवास करती हैं, इसी बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि मां ने चरित्र शुद्धि, जिन गुण संपत्ति, कर्म दहन, दशलक्षण व्रत, कोमली अठाई, अष्टान्हिका व्रत आदि सभी व्रत किए हैं एवं सभी बड़े विधान संपन्न कराए हैं। आज मां की उम्र लगभग 101 वर्ष है। पिछले 40 वर्षों से वे मुनियों की भांति अंतराय वगैरह टालते हुए एकासन करती हैं एवं नियम से दो दिन के आहार के बाद तीसरे दिन का उपवास रखती हैं। अष्टमी चतुर्दशी जैसे पर्व के दिन बीच में आ जाने पर एक दिन के अंतराल से अथवा बेला उपवास भी करती हैं। मां का कहना है कि लंघन (उपवास) हर बीमारी का इलाज है। यदि कदाचित उन्हें बुखार है या तबियत खराब है तो वह अगले दिन का उपवास अवश्य करती हैं। उनका मानना है कि शरीर को यदि भूखा छोड़ो तो जो खाना पचाने आदि क्रिया में शरीर के अंग व्यस्त होते हैं वे इवकल ीमंसपदह का काम स्वयं प्रारंभ कर देते हैं और सच में मैंने स्वयं देखा है कि उपवास के अगले दिन वह पूर्णतः स्वस्थ हो जाती हैं। हमें लगता है कि नित्य पौष्टिक भोजन, सूप, जूस आदि निरंतर पीते रहने से मल्टीविटामिन आदि गोलियां खाते रहने से शरीर स्वस्थ रहता है, जबकि मां का कहना है कि अल्पाहार और सादा भोजन लंबी उम्र का राज है। नमक, तेल, तली हुई वस्तुओं, आदि का उनका आजीवन त्याग है। बहुत ही सादा जीवन एवं उच्च विचार की धनी मां व्यायाम पर भी बहुत जोर देती हैं, उनका मानना है कि शरीर रूपी मशीन को चलाने के लिए रोजाना वॉक और एक्सरसाइज बहुत जरूरी है। आज इतनी उम्र में भी वे घर के हाल में दिन में दो-तीन बार आधा आधा घंटे वॉक करती हैं एवं एक साइकिल रूपी छोटे एक्सरसाइज मशीन को चलाती ही रहती हैं, उनका कहना है यदि वे यह सब ना करें तो बिस्तर पकड़ लेंगी और उनका देव दर्शन नित्यपूजन, गुरु सेवा इत्यादि छूट जाएगा। रात 3:30 बजे से मां की दिनचर्या शुरू हो जाती है। सुबह माला, स्वाध्याय, प्रतिक्रमणा सामायिक के बाद गृह चैत्यालय में नित्य पंचामृत अभिषेक करने के पश्चात 6:00 बजे घर से जिन मंदिर के लिए निकलती हैं। बरसात हो या गर्मी मां की दिनचर्या में कभी कोई बदलाव नहीं आता। मंदिर से 9:00 बजे तक वापस आकर भी उनका नित्य पाठ एवं टी वी पर आहारचर्या देखने के पश्चात ही स्वयं आहार के लिए उठती हैं। दिन भर में मात्र 15-20 मिनट के विश्राम के अलावा रात 9:00 तक निरंतर उनका धर्म कार्य ही चलता रहता है ऐसी निष्ठा भक्ति धर्म के प्रति समर्पण एवं प्रगाढ़ श्रद्धा का कहीं अतिरिक्त मिलना कठिन ही है। वर्तमान में मां की उम्र तकरीबन 101 साल है और वह आज पूर्ण स्वस्थ हैं। अपना सभी निजी कार्य खुद करती हैं। चौका यदि लगा हो घर में तो चौके का कार्य भी करती हैं। तीर्थयात्रा, मुनि सेवा, आहार देना, चौका लगना आदि कोई भी मौका नहीं चूकना चाहती। नई टेक्नोलॉजी आदि के प्रति भी पूरी सजगता से उन्हें सीखने की कोशिश करती हैं। वे निरंतर ऐसी ही स्वस्थ रहें एवं जैन धर्म के प्रति श्रद्धा के लिए हम सबको ऐसे ही प्रेरित करती रहें इसी मंगल भावना के साथ उनको शत-शत नमन।

संकलन-शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो. 9667168267

# शरीर दीक्षा तप साधना का साधन है इससे जीवन का साध्य निर्वाण प्राप्त किया जाता है

**- आचार्यश्री वर्धमान सागर**

**धरियाबाद।** जीवन और मरण निश्चित है जीवन जीने की परीक्षा मरण के समय होती है। वीरता पूर्वक समाधि और अधीरता बेचौनी पूर्वक मृत्यु होती है। समाज धर्मप्राण समाज है। पूर्व में आचार्य धर्मसागर जी, आचार्य अजीत सागर जी ने भी यहां वर्षायोग किए हैं समाज की यह भावना है कि आचार्य संघ का वर्ष 2025 का वर्षायोग धरियाबाद में हो आपके निवेदन पर हम विचार करेंगे। मुनि श्री प्रशस सागर जी का जीवन आध्यात्मिक जीवन रहा। 14 वर्ष के संयमी जीवन में संघ के सलाहकार रहे। उनकी गुरु के प्रति निष्ठा, समर्पण तथा समाधि समय शांत परिणाम बाबत बताया। मुनि श्री पूर्ण सागर जी भी देव शास्त्र एवं गुरु के प्रति समर्पित रहे। दीक्षा लेने वाले का लक्ष्य समाधि होता है। शरीर साधना का साधन है, साधन से साध्य प्राप्त कर जीवन का निर्वाण होता हैं। यह मंगल देशना धर्म सभा में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने प्रगट की। राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने बताया कि संयम पालन में शरीर सहायक नहीं होने, कमजोरी, रोग के कारण संलेखना गुरु सानिध्य में ली जाती है। शरीर के माध्यम से तप साधना की जाती है। संलेखना अर्थात् शरीर और 25 कषायों पर धीमे साधना तप से विजय प्राप्त की जाती है। शरीर संयम के पालन में बाधक होने पर साधु क्रमशः त्याग करते हैं। आचार्य श्री के उपदेश के पूर्व मुनि श्री हितेंद्रसागर जी ने दोनों समाधिस्थ साधुओं की प्रशंसा की। मुनि श्री पुण्यसागर जी ने बताया कि श्री मुनि पूर्ण सागर जी गृहस्थ अवस्था में श्रावक के नियमों का पालन कर प्रतिदिन देव दर्शन, अभिषेक एवं स्वाध्याय करते थे। उन्हें संगीत का शौक था। पूर्ण सागर जी के परिणाम जीवन हमेशा शांत, भक्तिमय, समतापूर्ण रहे। गुरु चरणों में छपक साधु की सल्लेखना अच्छी होती है। गुरुओं और छपक साधु के पुण्य से गुरुओं का सानिध्य द्रव्य, क्षेत्र काल का संयोग मिलता है। प्रतिष्ठाचार्य श्री हंसमुख ने बताया कि 26 मार्च की प्रातः आचार्य संघ नगर के जिनालयों के दर्शन कर नंदन वन प्रवेश करेंगे। मार्च 26 तथा 27 की आहार चर्या नंदनवन होगी। आचार्य संघ को प्रतापगढ़ आगमन हेतु महेंद्र शाह, संजय, पंकज, सुमित सहित अनेक भक्तों ने श्रीफल भेंट किया। **राजेश पंचोलिया**

# महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर द्वारा निशुल्क नेत्र एवं मेडिकल जांच शिविर का हुआ आयोजन

**फागी संवाददाता**

महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर जयपुर के तत्वावधान में निशुल्क नेत्र एवं मेडिकल जांच शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संस्था के अध्यक्ष वीर जे. के .जैन एवं सचिव वीर राजेश बड़जात्या ने अवगत कराया कि महावीर इंटरनेशनल के ध्येय वाक्य आजादी का अमृत महोत्सव- बीमारी से आजादी निशुल्क नेत्र एवं मेडिकल जांच शिविर का आयोजन सोमवार, दिनांक 24 मार्च को प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 3:00 तक भारत सरकार के उपक्रम भारतीय कटेनर निगम लिमिटेड (CONCOR), गोकुलपुरा, कनकपुरा जयपुर में महावीर इंटरनेशनल, दिल्ली के सहयोग से महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर द्वारा CONCOR के सहयोग से आयोजित किया गया। शिविर में शंकरा आई हॉस्पिटल द्वारा निशुल्क आँखों की जांच एवं इटरनल हॉस्पिटल के डाक्टर एवं उनकी टीम द्वारा ब्लड प्रेशर, शुगर, हीमोग्लोबिन, ई.सी.जी. की निशुल्क जांच की गई तथा शिविर में मरीजों को जेनेरिक दवाइयां व नजदीक के आँखों के चश्मों का वितरण किया गया। कायक्रम में उपाध्यक्ष वीर डॉ. राजेंद्र कुमार जैन एवं वीर सुरेश जैन बांदीकुई, उपाध्यक्ष ने बताया कि CONCOR के संजय कुमार कुमावत एसोसिएट आफिसर, हेमंत जैन एडिशनल ऑफिसर, कैम्प में उपस्थित रहे। वीर धनु कुमार जैन कोषाध्यक्ष एवं वीर सुनील बज, संयुक्त मंत्री ने अवगत कराया कि ग्रेटर के वीर नीरज जैन, वीर महावीर सेठी, वीर डॉ. नमोकर जैन, वीर सुनील जैन, वीरा विजया लक्ष्मी जैन, वीरा सुशीला बड़जात्या, वीर राजीव संघी आदि सदस्यों द्वारा शिविर व्यवस्था में सहयोग प्रदान किया गया। महावीर इंटरनेशनल दिल्ली की श्रीमती धरती जी वाषणेय, मेडिकल कैम्प कॉर्डिनेटर के मार्गदर्शन में कैम्प आयोजित किया गया। कैम्प के अंत में महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर द्वारा, कैम्प कॉर्डिनेटर नीरज जैन, इटरनल हास्पिटल, सहाय आई हास्पिटल के सहयोगी डाक्टर्स, तकनीशियन, लेब आदि का सम्मान किया गया।

# अस्पतालों में जैन समाज के मरीजों के लिए निशुल्कः भोजन सेवा का किया शुभारंभ

**फागी संवाददाता**

**जयपुर।** जैन धर्म के बीसवें में तीर्थंकर महावीर आदिनाथ के जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव पर जैनाचार्य 108 श्री सुनील सागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद से श्री सुनील सागर युवा संघ (रजिस्टर्ड) भारत एवं विश्व जैन संगठन जयपुर के संयुक्त तत्वाधान में जयपुर शहर के अस्पतालों में भर्ती जैन समाज के मरीजों एवं उनके परिजनों के लिए जैन भोजन सेवा का 23 मार्च 2025 को निःशुल्क शुभारंभ किया गया है। विश्व जैन संगठन जयपुर शाखा के अध्यक्ष बाबूलाल ईटूंन्दा ने बताया कि जैन समाज के लोगों का जयपुर के एवं बाहर से अस्पतालों में इलाज कराने के लिए आने वालों को शुद्ध एवं सात्विक भोजन के लिए परेशान होना पड़ता था। इसके अलावा अष्टमी एवं चतुर्दशी को भी विशेष नियम होने के कारण अस्पतालों में भर्ती लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता था लेकिन इस सेवा के शुरू होने के बाद अब जैन समाज के लोगों को शुद्ध एवं सात्विक जैन भोजन उपलब्ध हो सकेगा। जैन भोजन सेवा शुभारंभ का कार्यक्रम श्री 1008 आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर गोदीकान सांगानेर में किया गया। इस अवसर पर श्री सुनील सागर युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विकास जैन बडजात्या एवं विश्व जैन संगठन जयपुर शाखा के अध्यक्ष श्री बाबूलाल जैन ईटून्दा ने हेल्पलाइन नंबर 7240401008 को जारी किया। इस अवसर पर जैन समाज के श्रेष्ठि परिवार श्रीमान गजेंद्र जैन, अजय जैन प्रवीन जैन बड़जात्या परिवार भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अशोक जैन गुढ़ाचंद्रजी एवं डॉ. हिमांशु जैन ने लोगों को अवगत कराया कि सेवा का लाभ लेने के लिए आपको सुबह के खाने के लिए 9 बजे तक एवं शाम के खाने के लिए दोपहर में 3 बजे तक हेल्पलाइन नंबर पर सूचित करना पड़ेगा।कार्यक्रम की शुरुआत में मंगलाचरण प्रियंका जैन बिंदायका, खुशबू जैन ठोलिया, विनीता जैन, मीनू जैन बिलाला एवं चारू जैन द्वारा किया गया। इस सेवा को शुभारंभ करते हुए जैन भोजन थालियों को जयपुर के अस्पतालों में वितरित किया गया।

# श्री आदिनाथ स्वास्थ्य निधि आश्रम (वृद्धाश्रम) में एक इनवर्टर लगाया गया

**फागी संवाददाता**

जयपुर शहर में महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर की अगुवाई में श्री आदिनाथ स्वास्थ्य निधि वृद्धाश्रम में वृद्धजनों की सहुलियत हेतु एक इनवर्टर लगाया गया। कार्यक्रम में संस्था के अध्यक्ष जे. के. जैन व सचिव राजेश बड़जात्या ने अवगत कराया कि महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर द्वारा जौहरी बाजार दिगम्बर जैन महिला समिति द्वारा संचालित श्री आदिनाथ स्वास्थ्य निधि आश्रम (वृद्धाश्रम), में आनंद जी आस्था सिंगापुर निवासी पुत्री -दामाद धनु कुमार जैन कोषाध्यक्ष ग्रेटर के आर्थिक सहयोग से एक इनवर्टर उपयोग हेतु लगाया गया। महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर समाज सेवा के अनेक कार्यक्रम पूरे वर्ष भर आयोजित करता आ रहा है। इसी कड़ी में यह कार्यक्रम दिगम्बर जैन महिला समिति जौहरी बाजार की मंत्री श्रीमती पुष्पा सोगानी, तरुणा जैन, श्रीमती विद्या जी कासलीवाल, श्रीमती सुधा जी बज, श्रीमती ममता जी शाह, श्रीमती कविता जी जैन को महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर जयपुर के अध्यक्ष वीर जे. के. जैन, मंत्री वीर राजेश बड़जात्या, उपाध्यक्ष वीर डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन, कोषाध्यक्ष वीर धनु कुमार जैन, वीर नीरज जैन वीरा सुशीला बड़जात्या, वीरा विजय लक्ष्मी जैन, वीरा सीमा बड़जात्या, वीरा इंदु जैन की उपस्थिति वृद्धाश्रम के उपयोग हेतु प्रदान किया। महिला समिति द्वारा सभी ग्रेटर के पदाधिकारियों का तिलक व माला पहनाकर स्वागत किया। अध्यक्ष जे. के. जैन ने संस्था का परिचय दिया तथा सचिव राजेश बड़जात्या ने ग्रेटर के द्वारा किए जाने वाले आगामी सेवा कार्यों के बारे में जानकारी प्रदान की। उपस्थित ग्रेटर पदाधिकारियों द्वारा इस शानदार व्यवस्था को संचालित करने पर महिला समिति के पदाधिकारियों को बधाई प्रेषित की। उपाध्यक्ष वीर डॉ. राजेंद्र कुमार जैन ने उपस्थित सभी सदस्यों का महिला समिति सदस्यों का आभार और धन्यवाद ज्ञापित किया।

# नौगामा शहर में आदिनाथ की जन्म जयंती हर्ष उल्लास के साथ मनाई

**फागी संवाददाता/नोगामा।** आदिनाथ जयंती के उपलक्ष में 23 मार्च को प्रातः आदिनाथ मंदिर समवशरण मंदिर, सुखोदव तीर्थ नसियाजी में विशेष शांतिधारा अभिषेक किया गया, अभिषेक करने का प्रथम सौभाग्य पंचोली विपुल कुमार, महावीर ट्रेडर्स, मनोज जैन, सुभाष पंचोली को प्राप्त हुआ। अभिषेक के पश्चात् भगवान आदिनाथ की प्रतिमा गाजेबाजों के साथ पंडाल में गन गोटी में विराजमान की जहां पर मंगलाचरण के पश्चात् दीप प्रज्वलित किया गया एवं भगवान आदिनाथ की पूजन बड़े भक्ति भाव से वाद्य यंत्रों के मधुर स्वरों के साथ गरबा नृत्य करते हुए अष्ट द्रव्य के थाल सजाकर अर्घ्य चढ़ाए गए उसके बाद श्री जी की आरती बड़े भक्ति भाव से की गई। आरती करने का प्रथम सौभाग्य निलेश जैन को प्राप्त हुआ एवं फूलमाला की बोली का सौभाग्य पंचोली विपुल कुमार लक्ष्मी लाल को प्राप्त हुआ। पालना चरण का सौभाग्य शुभम सुप्रीम जी घाटोल को प्राप्त हुआ एवं इस अवसर पर उनके द्वारा मंदिर जी में छत्र भेंट किया गया। पालना झूलन प्रदीप रतनलाल पंचोरी, जतिन सुभाष, महिला मंडल, जयेश कुमार कन्हैयालाल को प्राप्त। हुआ उसके बाद विशाल शोभायात्रा बैंड-बाजों के साथ नगर भ्रमण को निकली जहां पर महिलाओं द्वारा समशरण मंदिर के बाहर गरबा नृत्य किया। इस अवसर पर पूरे नगर में घरों के बाहर रंगोली सजाई गई थी। जगह-जगह श्री जी की अगवानी की गई। शोभायात्रा तालाब बस स्टैंड होते हुए आदिनाथ मंदिर पहुंचकर विसर्जन हुआ। कार्यक्रम का संचालन विधानाचार्य रमेश चंद्र गांधी भारत पंचोली द्वारा किया गया। आभार की रस्म अध्यक्ष रमलाल जैन द्वारा की गई। इस अवसर पर पुलिस प्रशासन का सहयोग भी प्राप्त हुआ उक्त जानकारी जैन समाज प्रवक्ता सुरेश चंद्र गांधी द्वारा दी गई।

# कर्म पर बल देने वाले दार्शनिक एवं पूर्ण स्वाधीनता के पुरोधा का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक महोत्सव मनाया

**जिनेन्द्र जैन, पिपलाई**

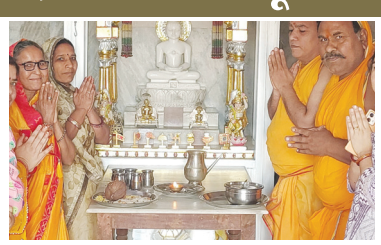

जैन विकास समिति द्वारा दिगम्बर जैन मन्दिर

**बामनवास।** बामनवास ब्लॉक में स्थित सभी जैन मन्दिरों में युग के आदि प्रवर्तक एवं जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर देवाधिदेव ऋषभदेव भगवान का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक महोत्सव बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। श्री वर्धमान दिगम्बर पिपलाई में सबसे पहले बृजेन्द्र कुमार जैन, सुनील कुमार जैन, आशीष जैन ने भगवान का जलाभिषेक किया एवं शान्तिधारा का लाभ लेने का सौभाग्य बृजेन्द्र कुमार जैन को प्राप्त हुआ इसके बाद देवाधिदेव ऋषभदेव भगवान की विशेष पूजाओं का आयोजन किया गया, शाम को महाआरती रखी गई जिसमें सभी श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़ - चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर श्री वर्धमान दिगम्बर जैन विकास समिति के मंत्री एवं सदस्य सुनील कुमार जैन और आशीष जैन ने बताया कि जैन संस्कृति में भगवान ऋषभदेव को इस युग का आदि प्रवर्तक माना जाता है इसलिए उनको आदिनाथ भी कहा जाता है। ऋषभदेव चौबीस तीर्थकरों में सबसे पहले तीर्थकर थे। सबसे बड़े पुत्र भरत के नाम से इस देश का नाम प्राचीन काल में भारत पड़ा। दूसरे पुत्र बाहुबली नाम से प्रसिद्ध थे। इस अवसर पर सुमनलता जैन, आशा जैन, रजनी जैन, सपना जैन, एकता जैन, रश्मि जैन, मेघना जैन, दीक्षिता जैन, वर्णिका जैन, जिनेन्द्र जैन, अमित जैन, अभिनन्दन जैन, भव्य जैन और अयांश जैन सहित कई श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

# जैन पुरातत्व के विश्वविख्यात धर्म मेरू निर्मलजी सेठी

**महावीर दीपचंद ठोले, महाराष्ट्र**

जैन समाज के भीष्म पितामह, जैन संस्कृति के सशक्त आधार स्तंभ, जैन पुरातत्व के रक्षक लौह पुरुष, विश्वविख्यात धर्म मेरु, महासभा के महानायक श्री निर्मल कुमारजी सेठी जैन की चतुर्थ पुण्य स्मृति 27 अप्रैल 2025 को पूरे भारतवर्ष में संपन्न हो रही है जो जैन धरोहर दिवस के रूप में मनाई जायेगी। शास्त्रों में वर्णित है जातस्य ध्रुवं मृत्यु अर्थात जो जन्म लेता है उसका मरण आवश्यंभावी है परंतु जो समाजहित में, धर्म के संवर्धन में अपना खून पसीना एक कर मृत्यु को वरण करता है वह अमरता को प्राप्त होता है। ऐसे ही निर्मल जी सेठी जिन्होंने अपने पारिवारिक संबंधों को तिलांजलि देकर, अपने स्वास्थ्य व उम्र को ना देखते हुए सदा ही तन मन धन से समाज उत्थान व पुरातत्व की रक्षा के लिए पूर्ण समर्पित एवं सजग रहकर कार्य किया और 27 अप्रैल 2021 के दिन अमरता को प्राप्त हो गये।

वे अपने माता-पिता के जेष्ठ पुत्र थे। अत्यंत सरल प्रकृति के निरभिमानी सत्पुरूष थे। बालपन से ही उनके जीवन में धार्मिक भावनाओं के साथ-साथ देव शास्त्र गुरु की भक्ति श्रद्धा एवं धर्म निष्ठा कूट-कूट कर भरी हुई थी।

सन् 1895 में स्थापित जैन समाज की शीर्षस्थ संस्था जो लम्बे समय से बस्ते में बंद थी, लुप्त प्रायः थी उसे पुनर्जीवित करने कोटा की मीटिंग में निर्मल जी सेठी को अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। उनके साथ त्रिलोकचंद जी कोठारी को महामंत्री बनाया गया। अध्यक्ष व महामंत्री की कर्मठ जोड़ी ने महासभा में प्राण फूंकना शुरू किये। उन्होंने अनेक आहुतियों से उपलब्धियां प्राप्त कर महासभा को नया स्वरूप प्रदान किया। अपने भक्तिपूर्ण कार्य से, कर्मठता से, दूरगामी विचारों से स्वयं को ही नहीं महासभा को चिर स्मरणीय बना दिया। महासभा का कार्य कौशल बढ़ाने के निमित्त से विस्तार करने जैन राजनीतिक चेतना मंच की स्थापना 1988 में की। तीर्थ संरक्षिणी महासभा का गठन 1998 में किया जिसका मूल उद्देश्य जैन धरोहरो, तीर्थक्षेत्र स्थापत्यों, स्थापत्य के अवशेषों, मूर्तियों एवं कला निधियों का समस्त भारतवर्ष में सर्वेक्षण, संरक्षण, जीर्णोद्धार एवं संवर्धन करना है। असुरक्षित बिखरे पड़े जैन पुरातत्व वैभव के लिए साइट म्यूजियमों की स्थापना करना, शोध पुस्तकों पत्रिकाओं का प्रकाशन करना भारतीय सर्वेक्षण एवं राज्यों के पुरातत्व विभाग से सहयोग लेना आदि है। उसके पश्चात् आपने 2004 में श्रुत संवर्धिनी, 2006 में जैन महिला महासभा, 2010 में राजनीतिक चेतना मंच, 2012 में दिगंबर जैन युवा महासभा, 2020 में निर्ग्रंथ सेंटर आफ आर्कियोलॉजी आदि विभागों की स्थापना की, जिसके कार्यों से महासभा का विस्तार होते गया।उन्होंने जैन पुरातत्वान्वेषण व पुरातत्व के कार्यों को आजीवन संपादित किया। वे जैन तीर्थों के जीर्णोद्धार में सतत संलग्न रहे और जीर्णोद्धार के नाम पर कतिपय लोगों, संस्थाओं द्वारा किए गए पुरातन जैनायतनों के विध्वंस का मुखर विरोध किया। पुरातत्व की रक्षा के लिए उनका प्रयत्न आचरणीय है। उनकी अटूट भावना थी कि हमारे जैन तीर्थ जैन पुरातत्व के अधिकार में रहें और संरक्षित रहे। आज भारत में जितने भी तीर्थ हैं, जिनका जीर्णोद्धार नहीं हो पाया है उनकी रुपरेखा तैयार कर उन तीर्थों को भारतीय एवं विदेशी पर्यटकों के लिए सार्वजनिक किया और उसके लिए भारत सरकार से अनुमति प्राप्त की। निर्मल जी सेठी ने भारत के अनेक तीर्थों पर स्वयं अपनी देखरेख में स्वयं के द्रव्य से जीर्णोद्धार कराकर जैन संस्कृति और पुरातत्व का संरक्षण किया इसलिए समाज ने उन्हें तीर्थोद्धारक के रूप में सम्मानित किया है। सेठी जी ने जितने मंदिरों, तीर्थों को संरक्षित किया उतने तीर्थों के कोई दर्शन भी नहीं किए होंगे।वे जैन संस्कृति के पुरातत्व एवं सांस्कृतिक प्राचीनता को देखकर पुलकित होते थे। वे उनकी सुरक्षा एवं विकास में एक पागल की तरह जुटे रहे। उन्हें न परिवार की, पत्नी की, उद्योग की, ना रिश्ते नाते की चिंता थी। बस एकमात्र धुन थी प्राचीन विस्मृत पुरातत्व को प्रकाश में लाने की। वे न स्वास्थ्य, न सुविधा, न मान सम्मान को देखते थे। उनके उत्साह एवं जोश को देखकर हम जैसे नतमस्तक हो जाते थे। चाहे पर्वत पर चढ़ना हो या घोर जंगल में पैदल चलना हो, वर्षा में, शीत में या भीषण गर्मी में सेठीजी का उत्साह कभी कम नहीं होता था। वह इस मामले में नौजवानों को भी पीछे छोड़ देते थे। वे व्यक्ति एक थे किन्तु कार्य सौ व्यक्तियों का करते थे। समाज और संस्कृति के उत्थान का अहर्निश कार्य करने वाला उनके जैसा अद्भुत व्यक्तित्व दूसरा होना दुर्लभ है।भारतवर्ष में यत्र तत्र बिखरी हुई एवं धूप, वर्षा से क्षरण हो रही एवं अविनय हो रही जैन मूर्तियों की सुरक्षा, संवर्धन के लिए वे हर पल चिंतित रहते थे। उनकी भावना सारे भारतवर्ष की पुरातत्व विभाग के संग्रहालय में जैन गैलरी बनाने की थी। अब तक पन्ना, मध्य प्रदेश, झांसी, मथुरा एवं लखनऊ आदि स्थानों पर जैन गैलरी की स्थापना हो चुकी है। महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजी नगर में भी भ. महावीर गैलरी के निर्माण का प्रयास चल रहा है।वे तीर्थों के जीर्णोद्धार को जीवन का प्रमुख उद्देश्य मानने वाले, समस्त विश्व का भ्रमण करके जिन धर्म का अलख जगाने वाले रमता योगी, निस्पृह, घर में रहकर भरत की तरह वैरागी, हिमालय की तरह सिद्धांतों पर अडिग, गंगा की तरह निर्मल मन वाले इस युग में होने वाले एक मात्र महामानव थे। आप न तो मताग्राही थे, न हठाग्राही। आप विचारों से समन्वयवादी थे। आप समाज संगठन चाहते थे। आपने समस्त भारतवर्ष के जैन तीर्थक्षेत्रों एवं जीर्णशीर्ण मंदिरों का जीर्णोद्धार इसलिए कराया क्योंकि वे जानते थे कि एक जीर्णशीर्ण मंदिर का जीर्णोद्धार करने में जो पुण्य अर्जित होता है वह पुण्य नवीन सौ मंदिर निर्माण करने में भी नहीं है। वे खंडगिरी उदयगिरि जहां विश्व का पहला शिलालेख खारवेल द्वारा लिखा गया था उसको विश्व हेरिटेज का स्थान दिलाने के लिए प्रयासरत रहे। सम्मेद शिखर जी के, गिरनारजी के विवाद को मिटाने में हर पल प्रयास किया। उनकी भावना जिस मंदिर में जो पूजन पद्धति होती आ रही है वही रहे। प्राचीन मंदिरों के स्वरूप को न बदला जाए। निर्मल जी को जीवन भर अहर्निश धार्मिक, सामाजिक उत्थान की उत्कृष्ट आकांक्षा, जैन दर्शन और संस्कृति के संरक्षण का भार, जैन पुरातत्व के प्रति महान आसक्ति दुष्कर से दुष्कर मार्ग पर भी विचलित नहीं होने देती थी। 125 वर्षीय महासभा के आप सबसे सशक्त लगातार चालीस वर्षों तक नायक थे। आपकी छत्रछाया में महासभा की चतुर्दिक कीर्ति हुई। आपके कार्य ने प्रत्येक समाज, प्रत्येक प्रदेश के जन जन को प्रभावित किया।आप ऐसे क्षमतावादी सूर्य थे जिनमें संयम की उष्मा तेजस्विता और ज्ञान, प्रकाश दोनों ही था। आप में जितनी कर्मठता थी उससे कई अधिक जीवटता थी। हौसला तो इतना कि पर्वत भी छोटा पड़ जाए। एक के बाद एक बज्रपात होता रहा। दो-दो जवान बेटों की अकस्मात मृत्यु के पश्चात् भी आप निस्पृही भाव से अपने उद्देश्यों में संलग्न रहे। यहां तक कि हर असंभव को संभव करने की कला के आगे आपकी आयु भी कभी आड़े नहीं आई। आप वास्तु के भी अच्छे जानकार थे। जब भी वे किसी मकान, ऑफिस, प्रतिष्ठान, भवन, जिन मंदिर पर जाते थे तो वे वास्तु की दृष्टि से अपना निरीक्षण, चिंतन बताकर आवश्यक सुझाव देते थे और संतोष भी प्रकट करते थे।विश्व में जैन धर्म कहां-कहां तक फैला हुआ है उसकी खोज के लिए वह हर समय उत्सुक रहते थे। उनका एक पैर देश में तो दूसरा विदेश मे रहता था। 85 वर्ष की उम्र मे भी विदेशों में जाकर जैन धर्म की खोज करना यह बहुत बड़ा कार्य उन्होंने किया। कंबोडिया के पंचमेरु मंदिर की यात्रा 125 लोगों को लेकर की। इंडोनेशिया की यात्रा 100 से अधिक लोगों को लेकर बारबाडोस के नंदीश्वर मंदिर की खोज की। लंदन के संग्रहालय में जाकर जैन मूर्तियां के बारे में जानकारी प्राप्त की। एशिया के वर्मा, अफगानिस्तान एवं वियतनाम के अलावा उत्तरी अमेरिका में जाकर माया सभ्यता के माध्यम से जैन धर्म के अस्तित्व की खोज में अनेक विद्वानों एवं श्रेष्ठियों को लेकर की। वहां के पुरातत्व संबधी अधिकारियों से एवं जैन नागरिकों से मिलकर उन जैन धरोहरों को पुरातत्व में शामिल करने के लिए परामर्श दिया। जिससे लोगों को सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त जैन समाज की प्राचीनता से तथा विज्ञान और आध्यात्मिकता में कितना समृद्ध है, यह जानकारी हो। विश्व पटल के समक्ष लाने का यह कार्य जो उन्होंने किया वह श्रमण संस्कृति को विश्वस्तर पर संस्थापित कराता है।निर्मल कुमार जी जैन तीर्थों के एनसाइक्लोपीडिया थे। आपका गरिमामयी व्यक्तित्व समाज की जन आकांक्षाओं के प्रतीक, सजग प्रहरी, वैचारिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर आप में ऊर्जा का अजब स्त्रोत जो समाज को जीवित तथा चैतन्य बनाता था। आपकी अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय सेवाएं, बहुआयामी क्षमताओं से श्रमण संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन, सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखने तथा जन संस्कृति की पताका को देश विदेश में फहराने में महत्वपूर्ण है। ऐसे कालजयी व्यक्तित्व बिरले ही नहीं महा बिरले होते हैं।आज आपका नश्वर शरीर हमारे साथ नहीं है परंतु आपकी पुण्यात्मा हमेशा हमारा मार्गदर्शन करते रहेगी। आपको याद करते हुए हमारी आखें हमेशा नम रहेंगी। कोई चलता पद चिन्हों पर, कोई पद चिन्ह बनाता है। पद चिन्ह बनाने वाला ही इस धरती पर पूजा जाता है। ऐसे कर्म योगी महान भव्यात्मा को श्रद्धा से शत शत वंदन, शत-शत नमन।

# जैन ज्योतिषी महाकुंभ में जुटे भारत के प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुविद

**रवि जैन गुरु जी**

दिनांक 18 मार्च 2025 बालयोगी आचार्य 108 श्री सौभाग्य सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद (पंजी.) का अष्टम अधिवेशन श्री 1008 पार्श्व नाथ दिगंबर जैन मन्दिर ग्रीनपार्क, नई दिल्ली में आयोजित किया गया, कार्यक्रम का आरम्भ प. महावीर प्रसाद जैन के मंगलाचरण से हुआ। चित्र अनावरण श्री अतिवीर जैन मेरठ, दीप प्रज्ज्वलन श्री विनोद जैन कृष्णा नगर, एवं आचार्य श्री को शास्त्र भेंट श्री कमल जैन साहिबाबाद, व श्री देवेन्द्र जैन सिंघई द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संयोजन श्री संदीप जैन राधेपुरी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अनेक विद्वानों द्वारा जैन ज्योतिष की आवश्यकता एवं उत्थान पर अपने विचार व्यक्त किए, तथा इसमें अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद (पंजी.) द्वारा प्रदत्त योगदान की चर्चा की। बालयोगी आचार्य श्री सौभाग्य सागर जी ने जैन ज्योतिष की प्राचीनता एवं उपयोगिता का प्रचार प्रसार करने के लिए सभी विद्वानों को प्रेरित किया। एवं सभी को अपना आशीर्वाद प्रदान किया. इस अवसर पर विश्व जैन संगठन के अध्यक्ष श्री संजय जैन को परिषद के अध्यक्ष श्री रवि जैन गुरूजी ने ''श्री नेमि गिरनार धर्म पदयात्रा'' को अपना समर्थन पत्र दिया. साथ ही अप्रेल मास में इंदौर में आचार्य विशुद्ध सागर को संघ के पट्टाचार्य पद महोत्सव में परिषद को सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण पत्र श्रीमती उर्मिल जैन जी कनाडा ने परिषद के अध्यक्ष जी को दिया। इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए परिषद के अध्यक्ष श्री रवि जैन गुरूजी द्वारा जैन सभा युसूफ सराय, ग्रीन पार्क नई दिल्ली का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के पश्चात सभी विद्वान दिल्ली स्थित विश्व प्रसिद्ध ''अक्षर धाम मन्दिर'' की पुरातत्व वास्तु कला देखने गए. सौभाग्य से वहाँ के अध्यक्ष स्वामी जी महाराज जी से ज्योतिष एवं पुरातत्व वास्तु कला पर चर्चा करने का भी अवसर प्राप्त हुआ। दिनांक 19 मार्च 2025 को ग्रीन पार्क जैन मन्दिर में दूसरे दिन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। अंतर्राष्ट्रीय जैन ''आदिनाथ'' चैनल के डायरेक्टर श्री निशांत जैन एवं सी ई ओ श्री आकाश जैन द्वारा आदिनाथ चैनल की ओर से सभी विद्वानों को सम्मानित किया गया, कार्यक्रम के पश्चात सभी विद्वानों को दिल्ली भ्रमण कार्यक्रम के अंतर्गत अहिंसा स्थल, कुतुबमीनार, लोटस टेम्पल, दादावाड़ी मन्दिर, आदि ऐतिहासिक स्थलों की वास्तुकला का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। तत्पश्चात श्वेत पिच्छाचार्य विद्यानंद जी की तपोभूमि ''कुन्द कुन्द भारती, नई दिल्ली'' में उनके शिष्य पट्टाचार्य 108 श्री श्रुतसागर जी महाराज के सानिध्य में ''ज्योतिष संगोष्ठी'' आयोजित की गयी. इसमें अनेक विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए गए। कार्यक्रम में डॉ वीरसागर जैन सहित अनेक विद्वानों की उपस्थिति रही. अपने प्रवचन में आचार्य श्री श्रुतसागर जी ने वास्तु एवं मानव देह के संबंध को उद्घाटित किया। एवं परिषद के सभी सदस्यों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। कुन्द कुन्द भारती कार्यकारिणी'' ने सभी विद्वानों का तिलक, अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। अंत में परिषद के संस्थापक एवं अध्यक्ष श्री रवि जैन गुरूजी ने अपने उद्बोधन में अखिल भारतीय जैन ज्योतिष आचार्य परिषद ( पंजी.) की स्थापना एवं प्रगति के विषय में बताया। इस आयोजन के लिए समस्त ''कुन्द कुन्द भारती कार्यकारिणी'' एवं सुदूर स्थानों से पधारे सभी विद्वानों का हार्दिक आभार प्रकट किया अपनी ओर से सभी को उपहार प्रदान किया। दोनों दिन के कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री डी के जैन, दिल्ली के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में संरक्षक श्री गजेन्द्र जैन फरुख नगर द्वारा जैनी जियालाल पंचांग एवं महामंत्री डॉ हुकुम चन्द जैन, द्वारा समय समीक्षा पंचांग सभी विद्वानों को भेंट किया गया। कार्यक्रम में परिषद के संरक्षक डॉ टीकम चन्द जैन, कोषाध्यक्ष डॉ सुमेर चन्द जैन, प्रचार मंत्री श्री दीपक जैन शास्त्री, सुशील जैन बुराड़ी के अतिरिक्त देश के विभिन्न प्रांतों से पधारे अनेक विद्वान एवं विदुषी ज्योतिष आचार्यों ने भाग लिया. जिनमें भोपाल से उल्लास जैन, प. लक्ष्मी चन्द जैन मुरादाबाद, शान्तिनाथ उपाध्ये बेलगावी अखिलेश जैन इंदौर, आशीष जैन इंदौर, कविता जैन गुरुग्राम, सुदर्शन जैन सांगली, अरविन्द जैन शास्त्री, संगीता जैन शिवपुरी, डॉ महेश चन्द जैन शामली, राकेश कुमार जैन सलाहकार कमल जैन साहिबाबाद, अशोक जैन शास्त्री, दीपक जैन शास्त्री, गजेन्द्र जैन फरुखनगर, देवेन्द्र जैन सिंघई पं.नेमीचंद जैन शास्त्री मयूर जैन नौगांव, डॉ शिल्पा जैन आगरा, अजित जैन शास्त्री सांगानेर प्रदीप जैन (सराय वाले) दिल्ली, जीतू भैया वास्तु विद छतरपुर, धीरज जैन बड़ौत, नितिन जैन इंदौर ने कार्यक्रम में भाग लिया।

# समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

**प्रश्न 1. मैंने एक मार्केट बनायी थी, मगर उसमें से एक भी दुकान नहीं बिकी, मेरे ऊपर बैंक का लोन भी चल रहा है, क्या करें - मनोज जैन, सूरत**

**उत्तर** - आप अपनी प्रोपट्री के ब्रह्म स्थान में एक पीतल का 3 इंच चकौर टुकड़ा दबा दें, अवश्य लाभ होगा।

**प्रश्न 2. मेरे बेटे के कान से पानी बहता रहता है, काफी इलाज किया मगर कोई लाभ नहीं हो पाया, इस कारण उसे सुनाई भी कम देने लगा - दीपक, दिल्ली**

**उत्तर** - दीपक जी, आप रोजाना अपने बेटे को पास बैठाकर श्री भक्तामर स्तोत्र का 45वां काव्य उसे 45 बार सुनायें तथा पन्ना रत्न का लॉकेट बुधवार को गले में धारण करायें।

**प्रश्न 3. मेरे बेटे को अचानक नजर लग गयी क्योंकि वो पढ़ाई में ठीक था मगर अचानक उसका मन पढ़ाई से हट गया - जगदीश नाथ, इन्दौर**

**उत्तर** - जगदीश नाथ जी, पढ़ाई से मन हटने का कारण उसकी कुंडली में नीच के बुध की दशा है अतः आप रोजाना उसे श्री भक्तामर स्तोत्र का 6वां काव्य 6 बार सुनायें तथा श्री विमलनाथ चालीसा पढ़ें।

**प्रश्न 4. मेरी शादी देरी से होगी क्या? किसी ने बताया है कि 32 वर्ष की आयु में होगी - सोनी, दिल्ली**

**उत्तर** - आपकी कुंडली के अनुसार आप जब 27 वर्ष की होगी तो शादी का बहुत अच्छा योग आयेगा, तब तक आप रोजाना श्री आदिनाथ चालीसा पढ़ें।

**गुरु जी से संपर्क सूत्र-**
**9990402062, 26755078**

# नंदनवन आध्यात्मिक विकास का स्थल उपक्रम हैः आचार्यश्री वर्धमान सागर

**राजेश पंचोलिया, इंदौर**

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परंपरा के पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज का संघ सहित धरियावद नगर से विश्व के सबसे छोटे 37 शिखर वाले दिगंबर जैन श्री चंद्रप्रभु जिनालय नंदनवन में प्रवेश हुआ।

समंतभद्र विद्या विहार के विद्यार्थियों ने गार्ड ऑफ ऑनर के रूप में आचार्य श्री की

परिक्रमा लगाकर भव्य मंगल अगवानी की। इस अवसर पर समंतभद्र विद्या विहार के विद्यार्थी सहित हजारों समाजजन एवं पंडित श्री हंसमुख शास्त्री ने परिवार सहित आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन आरती कर आचार्य श्री वर्धमान सागर संघ की अगवानी की। इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने देशना में बताया कि जैन धर्म तीर्थंकरों द्वारा दी गई देशना के आधार पर प्रतिपादित धर्म है यह अनादि निधन धर्म है। आचार्य संघ का मंगल बिहार प्रतापगढ़ मंदसौर की ओर चल रहा है।

# राजकुमार जी सेठी व धर्मेन्द्र जी सेठी ने किया महाराष्ट्र प्रांत का भ्रमण

**महावीर ठोले**

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार जी सेठी ने जैन धरोहर दिवस सफलता पूर्वक संपन्न कराने हेतु महाराष्ट्र प्रांत का भ्रमण किया। सर्वप्रथम आप पुणे के अभय प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री फिरोदिया जी से भेंटकर छत्रपति संभाजी नगर औरंगाबाद पधारे। आपके साथ स्वर्गीय निर्मल कुमार जी सेठी के सुपुत्र श्री धर्मेंद्र जी सेठी एवं एडवोकेट विकास जी जैन दिल्ली भी थे। आपका छत्रपति संभाजी नगर में महाराष्ट्र प्रांत के तीर्थ संरक्षिणी के अध्यक्ष वर्धमान पांडे, महामंत्री महावीर ठोले, पुरातत्व संयोजक अजीत लोहाड़े, डा. जयकुमार पाटणी, सौ. कलादेवी पान्डे, अतुल पान्डे, विशाल पान्डे, श्वेता पान्डे, याशीका पान्डे, हिरल पान्डे ने भावभीना स्वागत किया। तत्पश्चात सभी ने जालना

जाकर पट्टाचार्य विशुद्ध सागर जी गुरूदेव एवं ससंघ गुरूओं का आशीर्वाद प्राप्त किया।

पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी ने स्वर्गीय निर्मल कुमार जी सेठी के कार्यों की सराहना कर उनके पदचिन्हों पर चलकर उनके अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन किया एवं जैन धरोहर दिवस के लिए आशीर्वाद प्रदान किया। तत्पश्चात सभी श्री चिंतामणि पारसनाथ अतिशय क्षेत्र कचनेर जी के दर्शन हेतु गए। वहां पर क्षेत्र की ओर से प्रधानाध्यापक किरण मास्ट, पी यु स्कूल के अध्यक्ष श्री महावीर जी सेठी, कचनेर के मैनेजर स्वप्निल जैन ने सभी का शाल श्रीपाल देकर सम्मान किया। तत्पश्चात सेठी जी मुंबई जैन धरोहर दिवस की पूर्व तैयारी हेतु मुंबई रवाना हुए।

**39वीं पुण्यतिथि 30.03.2025 पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि**

सभी देशवासियों को महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाऐं

धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी, व्यवहार कुशल, हमारे प्रेरणास्रोत

**स्व. श्री भवंर लाल जी छाबड़ा**

जन्मतिथि 1913 - स्वर्गवास 30.03.1987

"आपकी स्मृतियां आपकी छवि विस्मृत हो ना पाएगी,
आपका व्यवहार आपकी बातें सदैव याद आएगी।"

-: श्रद्धासुमन अर्पितकर्ता :-

मंगलचंद, हरकचंद-प्रेमलता, मोतीलाल-चंद्रप्रभा, कमलचंद-तारादेवी (पुत्र-पुत्रवधु), चिरंजीलाल जी सेठी-कांता देवी, महावीर प्रसाद जी पाटनी-महेश देवी (बेटी-दामाद), मनीष-निशा, सपन-रजनी, रवि-रितु (पौत्र-पौत्रवधु), ममता-शरद सेठी (पौत्री-दामाद), मोहन्शी, कथांश, आरवी, दैविक, वैदिक, संभव (प्रपौत्र-प्रपौत्री) आदि समस्त छाबड़ा परिवार।

-: प्रतिष्ठान :-

➲ मनीष इंटरप्राइजेज (ए क्लास इलेक्ट्रिकल कांट्रैक्टर) ➲ मनीष छाबड़ा एंड कंपनी चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ➲ एस. आर. ब्रदर्स (इलेक्ट्रिक सामान के विक्रेता) ➲ रवि एंटरप्राइजेज (ए क्लास इलेक्ट्रिकल कांट्रैक्टर)

1008 श्री दि. जैन शांतिनाथ चैत्यालय, इंजीनियरिंग कॉलोनी, मान्यावास मानसरोवर, जयपुर मो. 9314019230, 9928012288

सबसे क्षमा क्षमा वीरस्य भूषणम् सबको क्षमा

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक -सुधेश कुमार जैन

**श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा**

**अध्यक्ष**
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

**कार्याध्यक्ष**
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

**महामंत्री**
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

**कोषाध्यक्ष**
पवन गोधा
मो. 9311198985

**प्रधान सम्पादक**
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

**परामर्शक सदस्य**
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

**सम्पादक**
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड,
ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com

**सह सम्पादक (मानद)**
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

**लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक**
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

**दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक**
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा,
5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर
कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

**जैन गजट की सदस्यता**

वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र.
रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

**'जैन गजट' में विज्ञापन**

देने हेतु सम्पर्क-
7607921391,
9415008344,7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो,
समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

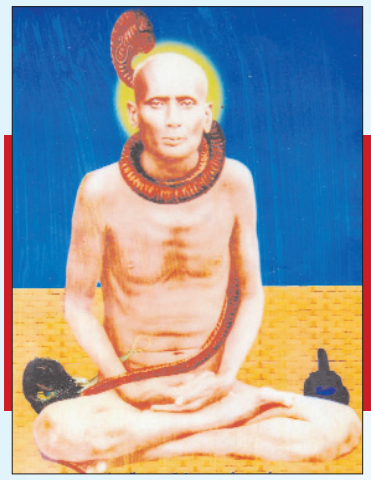

# प्रथमाचार्य शांतिसागर व्रत

**परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव (2024-25) के उपलक्ष्य में परम पूज्य पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज द्वारा सम्पूर्ण जैन समाज को संयम की प्रेरणा हेतु प्रदान किया गया एक व्रत का संकल्प**

आचार्य पद प्रतिष्ठापन
शताब्दी महोत्सव
13 अक्टूबर 2024 -
3 अक्टूबर 2025

## 36 एकासन का नियम

**प्रतिमाह कम से कम एक या अधिकतम तीन**

**जाप्यः ऊँ ह्रूँ प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर नमः।**

**पूजनः प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की पूजा**

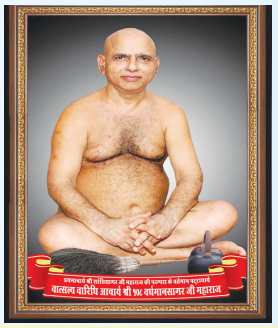

जितना जिनका प्रत्येक कार्य अदभुत आकर्षण व महान व्यक्तित्व है, जिनका नाम स्मरण करते ही हृदय भक्ति से भर जाता है, उन आचार्य श्री की गौरव गाथा तो उनकी मुखाकृति पर ही अंकित थी। लिखने की चीज भी नहीं यह तो मनन व अध्ययन की चीज है। काश उन्हें हम ठीक-ठीक समझ पाते।

सर्पराज का उपसर्ग जिनकी तपस्या में खलल न डाल सका, असंख्य चीटियों का घंटों काटना, जिनके लिये मानसिक अशान्ति का कारण न बन सका, सिंहनिष्क्रीड़ित व्रत के लम्बे उपवास के समय ज्वर का प्रकोप जिनको शिथिलाचार की ओर ठेल न सका, कंचन और कामिनी जैसे मोहक पदार्थ जिनके संयम साधना में बाधक न बन सकें उन योगिराज की आत्मा कितनी महान थी, यह सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता हैं। - शेखरचंद पाटनी

## नमनकर्ता/पुण्यार्जक

श्रीमती रत्नप्रभा
सेठी
गुवाहाटी

मन्जू देवी
सेठी
आंठ गांव

सुभाषचंद
कासलीवाल
दिसपुर, गुवाहाटी

मोहनलाल सुनील कुमार डॉ. नितेश काला चेन्नई
नीलम ललित बड़जात्या
प्रकाश चन्द्र बड़जात्या, चेन्नई
एम. के. जैन-सरिता जैन, चेन्नई
श्रीमती कमला पदम महेन्द्र धाकड़ा
अशोक अभिषेक पापड़ीवाल, चेन्नई
सुशीलादेवी,बीरकुमार सरावगी दिसपुर, गुहवाहाटी

नन्दलाल, पानादेवी, पारस रारा, मालदा
भाग्यश्री सिल्क, चेन्नई
अशोक संगीता बड़जात्या
मुकेश हरिता देवेश ठोल्या
सुरेश कुमार अभिषेक सेठी
उमेश संगीता उदित चांदवाड़
महावीर तारा विनोद श्रेया सेठी गुवाहाटी

बुधमल, सुलोचना, राजेन्द्र रारा मालदा
प्रदीप मोहित मयुर पाण्ड्या (डेह वाले)
अनिल कुमार काला (कन्नौज वाले)
रोहित दिव्या जैन (आगरा वाले)
कैलाश मानव रोजिन कुमार (आगरा वाले)
दिलीप निधि अर्नव भंडारी (आगरा वाले)
निर्मल कुमार छाबड़ा, गुवाहाटी

विज्ञापन प्रेषकः R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92
Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday
डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
.....
.....
.....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)
वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।